काव्यखंड

भिगो दूँगी अग-जग के छोर

बात बोलेगी
हम नहीं,
भेद खोलेगी
बात ही ।

– शमशेर बहादुर सिंह

मलिक मुहम्मद जायसी

जन्म	:	15वीं शती उत्तरार्ध, अनुमानतः 1492 ।
निधन	:	1548 अनुमानतः ।
निवास-स्थान	:	जायस, कब्र अमेठी, उत्तर प्रदेश ।
पिता	:	मलिक शेख ममरेज (मलिक राजे अशरफ) ।
गुरु	:	सूफी संत शेख मोहिदी और सैयद अशरफ जहाँगीर ।
वृत्ति	:	आरंभ में जायस में रहते हुए किसानी, बाद में शेष जीवन फकीरी में, बचपन में ही अनाथ, साधुओं-फकीरों के साथ भटकते हुए बचपन बीता ।
व्यक्तित्व	:	चेचक के कारण रूपहीन तथा बाईं आँख और कान से वंचित । मृदुभाषी, मनस्वी और स्वभावतः संत ।
कृतियाँ	:	पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा (महरी बाईसी), मसला या मसलानामा (खंडित प्रति प्राप्त) । इनके अतिरिक्त चंपावत, होलीनामा, इतरावत आदि कृतियाँ भी उल्लेख में आती हैं ।

लोकजीवन में प्रचलित प्रेमकथाओं को आधार बनाकर छंदोबद्ध कथाकाव्य लिखने की परिपाटी प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में ही रही थी । संभव है, वह संस्कृत में भी रही हो । यह परिपाटी साधारण जन-जीवन के प्रत्यक्ष अभिप्रेरण और संरक्षण में आगे उत्तरोत्तर बढ़ती हुई हिंदी में अव्याहत चलती चली आई । इसे हिंदी में प्रेमाख्यानक काव्य कहते हैं । चौपाई-दोहा आदि की कड़बक शैली में निबद्ध ये काव्य प्रायः अवधी में मिलते हैं । किसानों और कारीगरों की भाषा अवधी में ब्रज की गीतिमयता ओर कोमलता की तुलना में कथावृत्तों को विवरण और विस्तार में सहेज सकने की क्षमता थी । इस्लाम और उसके साथ तसव्वुफ (सूफी मत) के आगमन के बाद इसी प्रेमाख्यानक काव्य-परंपरा में अनेक मुसलमान कवि हुए जिन्होंने पहले से जन-प्रचलित प्रेम कहानियों को सूफी प्रेम साधना के अभिप्रायों से संबलित कर काव्य के रूप दिए.। मुल्ला दाउद से लेकर जानकवि और उससे भी आगे तक यह परंपरा अबाध रूप से चलती रही । मलिक मुहम्मद जायसी इस परंपरा की अन्यतम कड़ी हैं ।

जायसी के लिखे अनेक काव्य प्राप्त होते हैं जो आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ० माताप्रसाद गुप्त आदि अनेक विद्वानों द्वारा अलग-अलग 'जायसी ग्रंथावली' के नाम से संपादित हैं । जायसी की उज्ज्वल अमर कीर्ति का आधार है उनका महान कथाकाव्य 'पद्मावत' जिसमें चित्तौड़ नरेश रतनसेन और सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा है । इस प्रेमकथा का त्रिकोण पूरा होता है दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन के इस कहानी से जुड़ जाने से । अंशतः ऐतिहासिक आधार वाली इस कहानी का विकास जनश्रुतियों एवं आगे स्वयं कवि की सर्जनात्मक कल्पना द्वारा हुआ है ।

मलिक मुहम्मद जायसी 'प्रेम की पीर' के कवि हैं । मार्मिक अंतर्व्यथा से भरा हुआ यह प्रेम अत्यंत व्यापक,

गूढ़ आशयों वाला और महिमामय है । यह प्रेम अनुभूतिमय, रासायनिक एवं इस अर्थ में क्रांतिकारी है कि यह विभिन्न पात्रों को अमिट चरित्रों के रूप में निखारते हुए उन्हें एक दिशा देकर परिणतियों तक पहुँचा देता है । 'पद्मावत' के आख्यान में सजीव कहानी का मर्मस्पर्शी वेदनामय रस है और चरित्रों, उनके सुलगते-दहकते मनोभावों के दुर्निवार प्रभाव हैं जो पाठकों-श्रोताओं को अपने लपेटे में ले लेते हैं । इस प्रेमाख्यानक काव्य द्वारा विद्वेष और कलह के उस यंत्रणामय कठिन समय में धार्मिक-सांस्कृतिक-सामाजिक सद्भाव और साझेदारी की एक ऐसी जमीन जायसी ने तैयार की जो हमारी बहुमूल्य विरासत का हिस्सा है । जायसी की इस प्रेम कहानी में प्राणों का प्राणों से, हृदय का हृदय से, मर्म का मर्म से और जीवन विवेक का जीवन विवेक से ऐसा मानवीय मेल है जो उनके काव्य को बहुत ऊँचा उठा देता है और उसमें व्यापकता और गहराई एक साथ ला देता है । खाँड़ जैसी मीठी और खालिस अवधी में लिखे गए इस काव्य में कवि की विशालहृदयता, मार्मिक अंतर्दृष्टि और लोकजीवन के विस्तृत ज्ञान की अभिव्यक्ति हुई है ।

यहाँ प्रस्तुत दो कड़बक अलग-अलग संकलित हैं । ये पद्मावत के क्रमशः प्रारंभिक और अंतिम छंदों में से हैं, किंतु कवि और काव्य की विशेषताएँ निरूपित करते हुए दोनों के बीच एक अद्वैत की व्यंजना करते हैं । प्रारंभिक स्तुतिखंड से लिए गए प्रथम कड़बक में कवि एक विनम्र स्वाभिमान के साथ अपनी रूपहीनता और एक आँख के अंधेपन को प्रकृतिप्राप्त दृष्टांतों द्वारा महिमान्वित करते हुए रूप से अधिक अपने गुणों की ओर हमारा ध्यान खींचते हैं । इन गुणों के ही कारण 'पद्मावत' जैसे मोहक काव्य की रचना हो सकी ।

अंत के उपसंहार खंड से लिए गए द्वितीय कड़बक में कवि अपने काव्य और उसकी कथासृष्टि के बारे में हमें बताते हैं । वे कहते हैं कि उन्होंने इसे रक्त की लेई लगाकर जोड़ा है जो गाढ़ी प्रीति के नयनजल में भिगोई हुई है । अब न वह राजा रत्नसेन हैं और न वह रूपवती पद्मावती रानी है, न वह बुद्धिमान सुआ है और न राघवचेतन या अलाउद्दीन ही । इनमें कोई आज नहीं रहा किंतु उनके यश के रूप में कहानी रह गई है । फूल झड़कर नष्ट हो जाता है पर उसकी खुशबू रह जाती है । कवि यह कहना चाहता है कि एक दिन वह भी नहीं रहेगा पर उसकी कीर्ति सुगंध की तरह पीछे रह जाएगी । जो भी इस कहानी को पढ़ेगा वही उसे दो शब्दों में स्मरण करेगा । कवि का अपने कलेजे के खून से रचे इस काव्य के प्रति यह आत्मविश्वास अत्यंत सार्थक और बहुमूल्य है ।

◆ ◆ ◆

"जायसी के माध्यम से हिंदी साहित्य ने न सिर्फ अपने युग की, बल्कि युगों के भीतर कड़कती हुई मानवीय विषाद की तस्वीर देखी जिसमें निष्कलंक आदर्श भी हैं और बहुत कड़वे यथार्थ भी हैं, झिलमिलाती यूटोपिया भी है और रिश्वतखोरी पर चलते हुए कारागार भी हैं, सत और साका भी है और छल से भरा हुआ विध्वंसकारी राजहठ भी है । इस कवि की निर्मलता इसमें नहीं है कि जायसी सिर्फ चुनी हुई निष्कलंक चीजें देखते हैं, बल्कि इसमें है कि अच्छा-बुरा जो कुछ भी है, अपनी विविधता के साथ संपूर्ण परिदृश्य का अंग हो गया है ।"

–विजयदेव नारायण साही

कड़बक

(1)

एक नैन कबि मुहमद गुनी । सोइ बिमोहा जेइँ कबि सुनी ।
चाँद जइस जग बिधि औतारा । दीन्ह कलंक कीन्ह उजिआरा ।
जग सूझा एकइ नैनाहाँ । उवा सूक अस नखतन्ह माहाँ ।
जौं लहि अंबहि डाभ न होई । तौ लहि सुगंध बसाइ न सोई ।
कीन्ह समुद्र पानि जौं खारा । तौ अति भएउ असूझ अपारा ।
जौं सुमेरु तिरसूल बिनासा । भा कंचनगिरि लाग अकासा ।
जौं लहि घरी कलंक न परा । काँच होइ नहिं कंचन करा ।
एक नैन जस दरपन औ तेहि निरमल भाउ ।
सब रूपवंत गहि मुख जोवहिं कइ चाउ ।।

(2)

मुहमद यहि कबि जोरि सुनावा । सुना जो पेम पीर गा पावा ।
जोरी लाइ रकत कै लेई । गाढ़ी प्रीति नैन जल भेईं ।
औ मन जानि कबित अस कीन्हा । मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा ।
कहाँ सो रतनसेनि अस राजा । कहाँ सुवा असि बुधि उपराजा ।
कहाँ अलाउद्दीन सुलतानू । कहँ राघौ जेइँ कीन्ह बखानू ।
कहँ सुरूप पदुमावति रानी । कोइ न रहा जग रही कहानी ।
धनि सो पुरुख जस कीरति जासू । फूल मरै पै मरै न बासू ।
केइँ न जगत जस बेंचा केइँ न लीन्ह जस मोल ।
जो यह पढ़ै कहानी हम सँवरै दुइ बोल ।।

अभ्यास

कड़बक के साथ

1. कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है ?
2. पहले कड़बक में कलंक, काँच और कंचन से क्या तात्पर्य है ?
3. पहले कड़बक में व्यंजित जायसी के आत्मविश्वास का परिचय अपने शब्दों में दें ।
4. कवि ने किस रूप में स्वयं को याद रखे जाने की इच्छा व्यक्त की है ? उनकी इस इच्छा का मर्म बताएँ।
5. भाव स्पष्ट करें :-
   "जौं लहि अंबहि डांभ न होइ । तौ लहि सुगंध बसाइ न सोई ॥"
6. 'रकत कै लेई' का क्या अर्थ है ?
7. 'मुहमद यहि कबि जोरि सुनावा ।' –यहाँ कवि ने 'जोरि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है ?
8. दूसरे कड़बक का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें ।
9. व्याख्या करें –
   "धनि सो पुरुख जस कीरति जासू । फूल मरै पै मरै न बासू ॥"

कड़बक के आस-पास

1. पद्मावत की कथा अपने शिक्षक से मालूम करें और उसे सार रूप में अपनी कॉपी में लिखें ।
2. जायसी प्रेममार्गी धारा के श्रेष्ठ कवि हैं, इस धारा के पाँच अन्य कवियों और उनकी पुस्तकों के नाम अपने शिक्षक से मालूम करें ।
3. पठित कड़बकों के आधार पर जायसी की कैसी छवि आपके मन में उभरती है ? यह भी विचारें कि एक व्यक्ति के किन गुणों को याद रखा जाता है ?
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की पुस्तक 'त्रिवेणी' में तीन भक्तिकालीन कवियों–जायसी, सूर और तुलसी के साहित्यिक अवदान का परिचय दिया गया है । आचार्य शुक्ल जायसी पर विचार करने वाले प्रमुख आलोचक हैं । जायसी के संबंध में उनके विचारों की जानकारी अपने शिक्षक से प्राप्त करें ।
5. जायसी एक सूफी साधक हैं, सूफी मत और प्रमुख सूफी संतों के बारे में जानकारी एकत्र करें, प्रमुख सूफी संतों की जीवनियाँ लिखकर विद्यालय के बोर्ड पर चिपकाएँ ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखें –
   नैन, आम, चंद्रमा, रक्त, राजा, फूल
2. पहले कड़बक में कवि ने अपने लिए किन उपमानों की चर्चा की है, उन्हें लिखें ।
3. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखें, जैसे–तिरसूल का त्रिशूल ।
   नैन, दरपन, निरमल, पानि, नखत, पेम, रकत, कीरति, पुरुख

4. दोनों कड़बकों के रस और काव्य गुण क्या हैं ?
5. पहले कड़बक से संज्ञा पदों को चुनें ।
6. दूसरे कड़बक से सर्वनाम पदों को चुनें ।
7. जायसी के 'पद्मावत' और तुलसी के 'मानस' दोनों की भाषा अवधी है । पर दोनों महाकवियों के भाषिक संस्कार भिन्न हैं । यह भिन्नता क्या है ? अपने शिक्षक से मालूम करें ।

शब्द निधि

गुनी	:	गुणी, गुणशाली
सोइ	:	वही
जेइँ	:	जिसने
जइस	:	जैसा
जग	:	संसार
बिधि	:	ईश्वर (विधाता)
औतारा	:	अवतरण दिया, जन्म दिया
दीन्ह	:	दिया
सूझा	:	देखा
उवा	:	उदित
सुक	:	शुक, शुक्र नामक तारा
नखतन्ह माहाँ	:	नक्षत्रों के मध्य
जौं लहि	:	जब तक
अंबहि	:	आम में
डाभ	:	आम का नुकीलापन, फूटती हुई मंजरी
तिरसूल	:	त्रिशूल
घरी	:	घरिया, घड़िया जिसमें स्वर्णकार कोयले की आग सुलगाकर सोने को तपाकर खरा बनाता है
कलंक	:	कोयला
काँच	:	कच्ची धातु, कच्चा (बिना तपाया हुआ) सोना
करा	:	खरा, कड़ा, कठोर
निरमल	:	निर्मल, मैल से मुक्त, साफ
पेम	:	प्रेम
पीर	:	पीड़ा
रकत	:	रक्त
लेई	:	गोंद
मकु	:	मुझे
कीरति	:	कीर्ति
केंइ	:	किसने
बेंचा	:	बेचा (बेचना)

सूरदास

जन्म	:	1478 (अनुमानित) ।
निधन	:	1583 ।
जन्म-स्थान	:	दिल्ली के निकट 'सीही' नामक ग्राम ।
निवास-स्थान	:	ब्रजक्षेत्र में क्रमश: 'गऊघाट', वृंदावन एवं पारसोली ग्राम ।
शिक्षा	:	स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन. काव्य रचना एवं संगीत का विशद ज्ञान एवं अभ्यास । विशाल लोकज्ञान ।
अभिरुचि	:	पर्यटन, सत्संग, कृष्णाभक्ति एवं वैराग्य ।
दीक्षागुरु	:	महाप्रभु वल्लभाचार्य ('शुद्धाद्वैतवाद' एवं 'पुष्टिमार्ग' की भक्तिसाधना के प्रवर्तक प्रसिद्ध दार्शनिक, आचार्य एवं संत)
दीक्षाकाल	:	1509-10 अनुमानित ।
विशेष	:	जन्म से अंधे अथवा बड़े होने पर दोनों आँखें जाती रहीं । मृदुल, विनम्र, निरभिमानी, भावुक और अंतर्मुखी स्वभाव के विरक्त महात्मा ।
कृतियाँ	:	प्रमुख रूप से 'सूरसागर', 'साहित्यलहरी' राधारसकेलि, सूरसारावली आदि । 'सूरसागर' कवि की विश्वप्रसिद्धि का प्रमुख आधार । इसकी रचना 'श्रीमद्भागवत' की पद्धति पर द्वादश स्कंधों में हुई है । गेय पदों का विशाल संग्रह ।

मध्यकाल में हिंदी क्षेत्र में राजस्थानी, मैथिली, ब्रज, खड़ी बोली, अवधी आदि का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास हुआ था । इनमें ब्रजभाषा अपनी कोमलता, लालित्य और माधुर्य के कारण अत्यधिक लोकप्रिय होकर अनेक शतियों तक हिंदी क्षेत्र की प्रमुख काव्यभाषा बनी रही । कृष्ण और उनकी लीलाओं की जातीय स्मृति सँजोए ब्रजभाषा ब्रज की गोचारण प्रधान लोकसंस्कृति का संबल पाकर फैल चली । उसने अपनी गीत-संगीतमयी प्रकृति और अभिरुचियों द्वारा ब्रजक्षेत्र की सीमाओं का अतिक्रमण कर विपुल प्रसार और व्यापकता अर्जित की । सूरदास इसी ब्रजभाषा के महान कवि हैं । यद्यपि वे ब्रजभाषा के प्रारंभिक कवियों में एक हैं, तथापि उनकी कविता की भाषा इतनी विकसित, प्रौढ़ और समृद्ध है कि अपने वैभव और गांभीर्य से चकित कर देती है ।

सूरदास हिंदी की मध्यकालीन सगुण भक्तिधारा की कृष्णभक्ति शाखा के अन्यतम कवि हैं । वे वल्लभाचार्य की पुष्टिमार्गीय भक्ति में 'अष्टछाप' के उत्कृष्ट कवियों में श्रेष्ठ माने जाते हैं । इस तरह वे पुष्टिमार्ग के प्रधान भक्तकवि हैं । वल्लभ से दीक्षित होने के पूर्व वे दास्य, विनय और दैन्य भाव के आर्त पद गाया करते थे । दीक्षा के बाद सूर से ऐसे कुछ पद सुनकर गुरु ने उनसे कहा, ''सूर ह्वैकै ऐसो घिघियात काहे को हौ, कछु भगवत्लीला वर्णन करौ ।'' दीक्षा के बाद गुरु के श्रीमुख से भागवत दशम स्कंध सुनकर उनके भीतर लीलागान की प्रेरणा और स्फुरणा हुई और तब से उनकी भाव-भक्ति को एक दिशा मिल गई । वे लीलापद रचने और गाने लगे । सूरदास लीलारसिक कृष्णभक्त कवि हैं । उन्होंने कृष्णकथा के उन भावात्मक स्थलों और प्रसंगों को चुना है जिनमें उनकी अंतरात्मा की गहन-मार्मिक

अनुभूति पैठ सकी है । श्रीकृष्ण के जन्म, शैशव और किशोरवय की विविध लीलाओं को विषय बनाकर कवि ने भावों और रसों की बाढ़ ला दी है ।

सूर के काव्य के तीन प्रधान विषय हैं, विनय-भक्ति, वात्सल्य और प्रेम-शृंगार । इन्हीं तीन भाव-वृत्तों में उनका काव्य सीमित है । उसमें जीवन का व्यापक और बहुरूपी विस्तार नहीं है, किंतु भावों की ऐसी गहराई और तल्लीनता है कि व्यापकता और विस्तार पीछे छूट जाते हैं । वात्सल्य के तो वे विश्व में अद्वितीय कवि हैं । इस धरातल पर उनसे तुलना के लिए संसार में कोई कवि नहीं दिखाई पड़ता । वात्सल्य भाव के पदों की विशेषता यह है कि पाठक जीवन की नीरस और जटिल समस्याओं को भूलकर उनमें तन्मय और विभोर हो उठता है । भक्ति और शृंगार को एक कर देने वाले उनके प्रेम के संयोग और वियोग दशाओं से संबंधित हजारों पद उन्हें सार्वभौम मानवहृदय का मर्मी ज्ञाता, गायक और चितेरा साबित करते हैं । उनमें वेदना मिश्रित आनंद और लालित्य का पारावार उमड़ता है ।

सूर के पदों में मध्यकालीन गीतिकला अपने शिखर पर पहुँच जाती है । कविता, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, नाट्यकला आदि का ऐसा एकत्र समागम अन्यत्र दुर्लभ है । संगीत के संसर्ग में उनके पदों में जैसे पंख लग जाते हैं । किसी सुकंठ, मर्मी गायक के स्वरों में उनके पद पुष्प की तरह अपनी पंखुड़ियाँ खोल देते हैं । अपनी चित्रात्मकता, बिंबात्मकता, कोमलता, सजीव बेधकता, संक्षिप्ति, भावगर्भिता आदि गुणों के कारण गीतिकाव्य और गीतिकला के सार्वकालिक आदर्श बन जाते हैं सूरदास । अपने काव्य और कला से सूरदास ने अपने समय और समाज में सामंती उत्पीड़न, सामाजिक विभेद, विदेशी आक्रमण, सांस्कृतिक पराभव और मानमर्दन, निर्धनता, अशिक्षा, रोग-शोक आदि के कारण आई मानसिक कटुता, उदासी, विद्वेष और निराशा को धोकर बहा दिया तथा लोकमानस में नई जीवन-स्फूर्ति और उत्साह का संचार किया । लोकजीवन के मानसिक अवरोध को दूर कर दिव्य कामना, आशा और उत्साह के कुंठामुक्त जीवन-प्रवाह का संचार करने का ऐतिहासिक कार्य सूर के काव्य ने किया ।

यहाँ प्रस्तुत दोनों पद वात्सल्य भाव के हैं और 'सूरसागर' से संकलित हैं । इन पदों में सूर की काव्य और कला से संबंधित विशिष्ट प्रतिभा की अपूर्व झलक मिलती है । दोनों पदों में विषय, वस्तुचयन, चित्रण, भाषा-शैली, संगीत आदि गुणों का प्रकर्ष दिखाई पड़ता है । प्रथम पद में दुलार भरे कोमल-मधुर स्वर में सोए हुए बालक कृष्ण को भोर होने की सूचना देते हुए जगाया जा रहा है । द्वितीय पद में पिता नंद की गोद में बैठकर बालक कृष्ण को भोजन करते दिखाया जा रहा है । दोनों ही पदों में प्रेम और भक्ति की मर्मस्पर्शी अंतर्धारा प्रवाहित है । घर-घर के सुपरिचित इन दृश्यों और प्रसंगों में कवि के हृदय का ऐसा योग है कि ये प्रसंग अमिट हो जाते हैं ।

◆ ◆ ◆

"सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है । उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है । संगीत के प्रवाह में कवि स्वयं बह जाता है । वह अपने को भूल जाता है । काव्य में इस तन्मयता के साथ शास्त्रीय पद्धति का निर्वाह विरल है ।"

–हजारी प्रसाद द्विवेदी

पद

(1)

जागिए, ब्रजराज कुँवर, कँवल-कुसुम फूले ।
कुमुद-वृंद संकुचित भए, भृंग लता भूले ।
तमचुर खग-रोर सुनहु, बोलत बनराई ।
राँभति गो खरिकनि में, बछरा हित धाई ।
बिधु मलीन रवि प्रकास गावत नर नारी ।
सूर स्याम प्रात उठौ, अंबुज-कर-धारी ।।

(2)

जेंवत स्याम नंद की कनियाँ ।
कछुक खात, कछु धरनि गिरावत, छबि निरखति नंद-रनियाँ ।
बरी, बरा बेसन, बहु भाँतिनि, व्यंजन बिविध, अगनियाँ ।
डारत, खात, लेत अपनैं कर, रुचि मानत दधि दोनियाँ ।
मिस्री, दधि, माखन मिस्रित करि, मुख नावत छबि धनियाँ ।
आपुन खात, नंद-मुख नावत, सो छबि कहत न बनियाँ ।
जो रस नंद-जसोदा बिलसत, सो नहिं तिहूँ भुवनियाँ ।
भोजन करि नंद अचमन लीन्हौ, माँगत सूर जुठनियाँ ।।

अभ्यास

पद के साथ

1. प्रथम पद में किस रस की व्यंजना हुई है ?
2. गायें किस ओर दौड़ पड़ीं ?
3. प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।
4. पठित पदों के आधार पर सूर के वात्सल्य वर्णन की विशेषताएँ लिखिए ।
5. काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें –
   (क) कछुक खात कछु धरनि गिरावत छवि निरखति नंद-रनियाँ ।
   (ख) भोजन करि नंद अचमन लीन्है माँगत सूर जुठनियाँ ।
   (ग) आपुन खाक, नंद मुख नावत सो छबि कहत न बनियाँ ।
6. कृष्ण खाते समय क्या-क्या करते हैं ?

पद के आस-पास

1. सूरदास के जीवन के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें ।
2. सूर ने वात्सल्य के साथ-साथ श्रृंगार का अपूर्व चित्रण किया है । उनका 'भ्रमरगीत' हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में स्वीकृत है । 'भ्रमरगीत' का वर्ण्य-विषय क्या है ? मालूम करें ।
3. सूर के पदों को कई गायकों ने गाया है । आप उनके कैसेट उपलब्ध करें और सुनें ।
4. अष्टछाप के अन्य कवि कौन-कौन थे ? उनकी पुस्तकों के नाम क्या हैं ? उनके पदों को प्राप्त कर पढ़ें ।
5. अमृतलाल नागर ने सूर पर एक उपन्यास लिखा है –'खंजन नैन' उसे उपलब्ध कर पढ़ें और मित्रों से चर्चा करें ।
6. प्रथम पद में प्रातःकालीन प्रकृति की सुंदरता का चित्रण हुआ है । इसी पुस्तक में शमशेर बहादुर सिंह की कविता में भी ऐसा ही है । दोनों की तुलना कीजिए ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाएँ–
   मलिन, रस, भोजन, रुचि, छवि, दही, माखन
2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची दें –
   धरनि, रवि, अंबुज, कमल
3. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखें –
   धरनि, गो, कँवल, बिधु, स्याम, प्रकास, बनराई
4. निम्नलिखित के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   मलिन, नर, संकुचित, धरणी, विधु

5. पठित पदों के आधार पर सूर की भाषिक विशेषताओं को लिखिए ।

6. विग्रह करते हुए समास बताएँ–

नंद-जसोदा, व्रजराज, खग रोर, अंबुजकरधारी

शब्द निधि

कँवल	:	कमल	धरनि (धरणी)	:	पृथ्वी
कुमुद	:	कमल की जाति का छोटा फूल	छवि	:	शोभा
वृंद	:	समूह	बरी	:	बड़ी (बेसन से बना भोज्य पदार्थ)
भृंग	:	भ्रमर	अगनियाँ	:	अगणित
तमचुर	:	मुर्गा	दधि दोनियाँ	:	दही की दोनी
रोर	:	कोलाहल	नावत	:	डालते हुए
बनराई	:	पेड़-पौधे	धनियाँ	:	धन्य
खरिकनि	:	बाड़ों में	कहत न बनियाँ	:	वर्णन करते नहीं बनता
बिधु	:	चंद्रमा	तिहूँ भुवनियाँ	:	तीनों लोकों में
अंबुज	:	कमल	अचमन	:	कुल्ला करना
जेंवत	:	भोजन करते हुए	जुठनियाँ	:	जूठन
कनियाँ	:	गोद	राँभति	:	गाय का रंभाना

तुलसीदास

जन्म	:	1543 ।
निधन	:	1623 ।
जन्म-स्थान	:	राजापुर, बाँदा, उत्तरप्रदेश ।
मूल नाम	:	रामबोला ।
माता-पिता	:	हुलसी एवं आत्माराम दुबे ।
पत्नी	:	रत्नावली (विवाह के कुछ ही समय बाद वैराग्य के कारण विछोह) ।
प्रतिपालिका दासी	:	चुनियाँ, जिसने जन्म के बाद परिवार द्वारा परित्यक्त होने पर पालन-पोषण किया ।
दीक्षा गुरु	:	नरहरि दास, सूकरखेत के वासी, गुरु ने विद्यारंभ कराया ।
शिक्षा गुरु	:	शेष सनातन, काशी के विद्वान ।
शिक्षा	:	चारों वेद, षड्दर्शन, इतिहास, पुराण, स्मृतियाँ, काव्य आदि की शिक्षा काशी में पंद्रह वर्षों तक प्राप्त की ।
निर्णायक घटना	:	काशी में विद्याध्ययन के बाद जन्मभूमि आकर कथावाचक व्यास बन गए । दीनबंधु पाठक ने व्यक्तित्व और वक्तृता से प्रभावित होकर अपनी पुत्री रत्नावली से विवाह कर दिया । पत्नी से प्रगाढ़ प्रेम और आसक्ति के कारण फटकारे जाने पर विरक्त हो गए और गृहस्थ जीवन एवं घर का परित्याग कर दिया ।
स्थाई निवास	:	काशी में ।
तीर्थयात्राएँ	:	सूकरखेत, अवध, चित्रकूट, प्रयाग, मथुरा-वृंदावन, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, बद्रीनाथ, नैमिषारण्य मिथिला, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर आदि प्रमुख तीर्थों की यात्राएँ समय-समय पर काशीवास करते हुए ही संपन्न कीं ।
मित्र और स्नेही	:	अब्दुर्रहीम खानखाना, महाराजा मानसिंह, नाभादास, दार्शनिक मधुसूदन सरस्वती, टोडरमल आदि ।
कृतियाँ	:	रामलला नहछू, वैराग्य संदीपिनी, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली, रामचरितमानस, विनय पत्रिका । इनके अतिरिक्त 44 छंदों की हनुमान बाहुक रचना को कवितावली का ही अंग माना जाता है । उसे स्वतंत्र करने पर कुल 13 छोटी-बड़ी कृतियाँ होती हैं । इनके अतिरिक्त कुछ अन्य कृतियाँ भी बताई जाती हैं । कुल 12 या 13 कृतियों की प्रामाणिकता असंदिग्ध ।
मानस का रचना समय	:	रचनारंभ तिथि सं० 1631 (1574 ई०) चैत्र शुक्ल नवमी मंगलवार रामजन्म की तिथि पर, अयोध्या में कवि की 31 वर्ष की अवस्था में । रचना 1633 (1576 ई०) अगहन शुक्ल पंचमी–राम सीता विवाह की तिथि को कुल 2 वर्ष 7 माह 26 दिन में पूर्ण हुई ।
व्यक्तित्व	:	विनम्र, मृदुभाषी, गंभीर और शांत स्वभाव के गौरवर्ण के सुदर्शन व्यक्ति थे जिनके वक्षस्थल पर तुलसी की बड़ी-बड़ी गुरियों वाली माला रहती थी । वे कौपीन पहनते थे । 'राम' शब्द के 'रा' पद का उच्चारण होते ही रोमांचित हो उठते थे । अपना प्रसिद्ध पद ''भरत भए ठाढ़े कर जोरि' अनुराग भरे प्रगाढ़ स्वर में गद्गद् कंठ से गाया करते थे ।

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के शीर्षस्थ जातीय महाकवि हैं । सार्वभौम काव्य प्रतिभा से संपन्न महाकवि पर,

और इनके काव्य पर, हिंदी भाषा, साहित्य और समाज को गर्व है । हिंदी समाज और संस्कृति पर इनकी छाप गहरी और अमिट है । गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के मध्यकालीन भक्तिकाव्य की सगुण भक्तिधारा की रामभक्ति शाखा के प्रधान कवि हैं । उनका महाकाव्य 'रामचरितमानस' हिंदी की श्रेष्ठतम प्रबंधात्मक कृति है जिसमें संपूर्ण परंपरा, युगजीवन, समाज एवं संस्कृति की समन्वित संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है । रामकथा को लेकर लिखे गए काव्यों में आदिकवि वाल्मीकि की 'रामायण' के बाद 'रामचरितमानस' ही सर्वाधिक सफल, लोकप्रिय एवं उत्कृष्ट कृति है । शायद इसीलिए आज 'रामायण' कहने पर मानस का ही बोध होता है और गोस्वामी जी को वाल्मीकि का अवतार कहा जाता रहा है -

''कलि कुटिलजीव निस्तार हित वालमीक तुलसी भयो''

गोस्वामी जी का जीवन अत्यंत यातना और संघर्ष में गुजरा था । बचपन में ही अनाथ होकर भिक्षाटन करते हुए वे साधुओं की मंडली से जा लगे और उनके साथ देशाटन करते रहे । स्वामी रामानंद की शिष्य परंपरा के उनके गुरु ने शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की । युवावस्था में उनका विवाह भी हुआ था । वे कथावाचन की वृत्ति से अपनी गृहस्थी चलाते थे । शीघ्र ही गृहस्थ जीवन का परित्याग कर वे विरक्त साधु जीवन में चले आए । इस जीवन में व्यापक परिभ्रमण करते हुए उन्होंने लोकजीवन से संपृक्ति और तादात्म्य स्थापित किया । उनके काव्यों में लोकजीवन के व्यापक, बहुविध अंतरंग ज्ञान और अनुभव की अभिव्यक्ति हुई है । स्पष्ट है कि इसके पीछे उनका व्यापक पर्यवेक्षण अनुभव और अध्ययन था ।

गोस्वामी जी की संवेदना गहन और अपरिमित थी, अंतर्दृष्टि सूक्ष्म और व्यापक थी, विवेक प्रखर और क्रांतिकारी था । कवि में इतिहास एवं संस्कृति का व्यापक परिप्रेक्ष्यबोध और लोकप्रज्ञा थी । इन युगांतरकारी बौद्धिक, नैतिक रचनाओं द्वारा कवि ने ऐसा आदर्श उपस्थित कर दिया जो अतुलनीय है ।

गोस्वामी जी ने अपने युग की प्रमुख साहित्यिक भाषाओं-अवधी एवं ब्रज दोनों को अपनाया । सामान्यत: प्रबंध रचना के लिए अवधी और गीतिकाव्य के लिए ब्रजभाषा । किंतु उन्होंने इन काव्यभाषाओं में अन्य बोलियों के शब्दों, मुहावरों और अन्य भाषातत्त्वों के सम्मिश्रण से एक ऐसी व्यापक साहित्य-भाषा विकसित की जिसमें संप्रेषण और संवाद की अधिक क्षमता थी और जो आगे की भाषा के लिए आधार बन सकी ।

काव्यशैलियों में भी उन्होंने व्यापक सूझबूझ, उदारता, मनस्विता और लोकवाद का परिचय दिया । प्रबंध और गीति शैलियों को अपनाते हुए उन्होंने अपने युग की दो महान कृतियाँ-'रामचरितमानस' और 'विनय पत्रिका' की रचना की । परंपरा से आते हुए दोहा, सोरठा, चौपाई, कवित्त आदि छंदों को रचना का आधार बनाते हुए उन्होंने अपने समय में प्रचलित प्राय: सभी शास्त्रीय और लोकछंदों तथा शैलियों को अपनाया । लोकसंस्कृति के चित्रण के प्रति विशेष रुझान के कारण सोहर, नहछू, विवाह आदि सभी तरह के रीति-रिवाजों और आचार व्यवहारों का उन्होंने चित्रण किया तथा उन अवसरों पर गाए जाने वाली गीतिशैलियों को काव्य में समाहित किया । इन अभिव्यक्ति पद्धतियों द्वारा उन्होंने राम और उनकी कथा के प्रति अनुराग और भक्ति की लोकपावन गंगा बहा दी । एक भक्तकवि और संत होते हुए भी उन्हें एक महान लोकनायक की प्रतिष्ठा प्राप्त है । हिंदी जनता के हृदय में शताब्दियों से वे विराज रहे हैं और लोकमानस में जो स्थान उन्हें प्राप्त हुआ है उसे फिर कोई दूसरा न पा सका ।

◆ ◆ ◆

"तुलसी का काव्य मध्यकालीन उत्तर भारत का सबसे प्रामाणिक संदर्भकोश है । उसमें तुलसी द्वारा देखा और समझा हुआ भारत मौजूद है । इसमें उसकी विषमताएँ, अच्छाइयाँ-बुराइयाँ, सुख-दुख भी हैं और उसकी आशा-आकांक्षा भी मौजूद हैं ।"

-विश्वनाथ त्रिपाठी

पद

(1)

कबहुँक अंब अवसर पाइ ।
मेरिओ सुधि द्याइबी कछु करुन-कथा चलाइ ॥
दीन, सब अँगहीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ ॥
बूझिहैं 'सो है कौन', कहिबी नाम दसा जनाइ ।
सुनत रामकृपालु के मेरी बिगारिऔ बनि जाइ ॥
जानकी जगजननि जन की किए बचन-सहाइ ।
तरै तुलसीदास भव तव-नाथ-गुन-गन गाइ ॥

(2)

द्वार हौं भोर ही को आजु ।
रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु ॥
कलि कराल दुकाल दारुन, सब कुभाँति कुसाजु ।
नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु ॥
हहरि हिय में सदय बूझयो जाइ साधु-समाजु ॥
मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ, तिन्ह कहयो कोसलराजु ॥
दीनता-दारिद दलै को कृपाबारिधि बाजु ।
दानि दसरथरायके, तू बानइत सिरताजु ॥
जनमको भूखो भिखारी हौं गरीबनिवाजु ।
पेट भरि तुलसिहि जैंवाइय भगति-सुधा सुनाजु ॥

अभ्यास

पद के साथ

1. 'कबहुँक अंब अवसर पाई ।' यहाँ 'अंब' संबोधन किसके लिए है ? इस संबोधन का मर्म स्पष्ट करें ।
2. प्रथम पद में तुलसी ने अपना परिचय किस प्रकार दिया है, लिखिए ।
3. अर्थ स्पष्ट करें–

   (क) नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ ।

   (ख) कलि कराल दुकाल दारुन, सब कुभाँति कुसाजु ।
नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु ।।

   (ग) पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भगति-सुधा सुनाजु ।
4. तुलसी सीता से कैसी सहायता माँगते हैं ?
5. तुलसी सीधे राम से न कहकर सीता से क्यों कहलवाना चाहते हैं ?
6. राम के सुनते ही तुलसी की बिगड़ी बात बन जाएगी, तुलसी के इस भरोसे का कारण क्या है ?
7. दूसरे पद में तुलसी ने अपना परिचय किस तरह दिया है, लिखिए ।
8. दोनों पदों में किस रस की व्यंजना हुई है ?
9. तुलसी के हृदय में किसका डर है ?
10. राम स्वभाव से कैसे हैं, पठित पदों के आधार पर बताइए ।
11. तुलसी को किस वस्तु की भूख है ?
12. पठित पदों के आधार पर तुलसी की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए ।
13. 'रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु ।' –यहाँ 'और' का क्या अर्थ है ?
14. दूसरे पद में तुलसी ने 'दीनता' और 'दरिद्रता' दोनों का प्रयोग क्यों किया है ?
15. प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए ।

पद के आस-पास

1. दूसरे पद में तुलसी ने कलि काल का उल्लेख किया है, कवितावली में भी इसका उल्लेख है, कवितावली से एक छंद यहाँ प्रस्तुत है । दोनों पदों की तुलना करते हुए अपने विचार दें ।

   खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।
जीविका-बिहीन लोग सीद्यमान, सोच–बस,
कहैं एक एकन सों कहाँ जाईं का करी ?
वेद हू पुरान कही, लोक हू विलोकियत,
साँकरे सबै पै राम रावरे कृपा करी ?
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ॥
2. विनय पत्रिका की रचना तुलसी ने अपने जीवन के उत्तरार्ध में की है, तुलसी के जीवन के विषय में जानकारियाँ एकत्र करें और एक लेख के रूप में इसे कक्षा में प्रस्तुत करें ।
3. प्रसिद्ध कथाकार अमृतलाल नागर ने तुलसी को केंद्र में रखकर 'मानस का हंस' उपन्यास लिखा है, इस उपन्यास को उपलब्ध कर पढ़ें ।

4. क्या आपने कभी लोगों को समूह में बैठकर वाद्यवृंद के साथ रामायण गाते हुए सुना है ? अपने अनुभव का वर्णन करें ।
5. दोनों पदों में तुलसी का 'आत्म' प्रकट है, यहाँ कवितावली से एक छंद प्रस्तुत है जिससे उनकी मानसिक बनावट का पता चलता है । इस पद के आधार पर तुलसी का स्वभाव कैसा प्रतीत होता है ? लिखिए ।

   धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहो कोऊ ।
   काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ।
   तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
   माँगि कै खैबो मसीत को सोइबो, लैबे को एक न दैबे को दोऊ ॥

6. 'तुलसी जयंती' किस तिथि को पड़ती है ? अपने विद्यालय में उस तिथि को 'तुलसी जयंती समारोह' आयोजित करें ।
7. क्या तुलसी आज प्रासंगिक हैं, उदाहरणों के साथ अपना पक्ष रखें । 'तुलसी : मेरे लिए' विषय पर एक निबंध लिखें और इसे अपने वर्ग में प्रस्तुत करें ।
8. अनेक गायकों ने 'मानस' और 'विनय पत्रिका' के पद गाए हैं । इनमें मुकेश, छन्नूलाल मिश्र, हरिओम शरण मुख्य हैं । इनके कैसेट सुनकर अपनी प्रतिक्रिया लिखें ।

भाषा की बात

1. दोनों पदों से सर्वनाम पद चुनें ।
2. दूसरे पद से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
3. पठित अंशों से विदेशज शब्दों को चुनें ।
4. पठित पद किस भाषा में हैं ?
5. 'कोढ़ में खाज होना' का क्या अर्थ है ?
6. निम्नलिखित शब्दों का खड़ी बोली रूप लिखें–
   जनमको, हौं, तुलसिहि, भगति, मोहुसे, कहुँ, कतहुँ

शब्द निधि

कबहुँक	:	कभी	काजु	:	कार्य
अंब	:	माँ	कलि	:	कलियुग
मेरिओ	:	मेरी भी	कराल	:	भीषण, कठिन
सुधि	:	याद	दुकाल	:	बुरा समय (दुष्काल)
द्याइबी	:	दिला देना	दारुन	:	भयानक, असह्य
छीन	:	क्षीण, दुर्बल	कुभाँति	:	बुरी तरह
अघी	:	पापी	कुसाजु	:	अव्यवस्थित, दुर्गतिग्रस्त
प्रभु–दासी	:	प्रभु की दासी (सीता के लिए)	हहरि	:	कराह, हृदय की पीड़ा
बिगारिओ बनि जाइ	:	बिगड़ा हुआ बन जाएगा	हिय	:	हृदय
हौं	:	मैं	दारिद	:	दरिद्रता
रिरिहा	:	रिरियाता	कृपाबारिधि	:	कृपा सिंधु
आरि	:	आश्रय, अड़ान	जेंवाइय	:	खिलाइए
कौर	:	भोजन, निवाला	सुनाजु	:	सु+अनाजु (अच्छा भोजन)

नाभादास

जन्म	:	1570 अनुमानित ।
निधन	:	अज्ञात, (1600 तक वर्तमान) ।
जन्म-स्थान	:	सांप्रदायिक मान्यता के अनुसार दक्षिण भारत में, शैशव में पिता की मृत्यु और अकाल के कारण माता के साथ जयपुर (राजस्थान) में प्रवास । दुर्योगवश माता से भी बिछोह ।
शिक्षा	:	गुरु और प्रतिपालक की देख-रेख में स्वाध्याय, सत्संग द्वारा ज्ञानार्जन ।
अभिरुचि	:	लोकभ्रमण, भगवद्भक्ति, काव्य रचना, वैष्णव दर्शन-चिंतन में विशेष रुचि ।
दीक्षागुरु	:	स्वामी अग्रदास (अग्रअली), जो स्वामी रामानंद की शिष्य परंपरा के प्रसिद्ध कवि थे ।
स्थाई निवास	:	वृंदावन ।
कृतियाँ	:	भक्तमाल (रचनाकाल 1585-1596 निर्धारित) अष्टयाम (ब्रजभाषा गद्य में) अष्टयाम ('रामचरितमानस' की दोहा-चौपाई शैली में) रामचरित संबंधी प्रकीर्ण पदों का संग्रह ।
विशेष	:	कवि नाभादास की पारिवारिक-सामाजिक पृष्ठभूमि अधिकतर विद्वानों के मुताबिक दलित वर्ग की थी ।

नाभादास सगुणोपासक रामभक्त कवि थे । उनकी भक्ति प्रचलित रामभक्ति से थोड़ी भिन्न थी । उसमें मर्यादा के स्थान पर माधुर्यभाव का पुट था । वे गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन थे और स्वामी रामानंद की ही शिष्य परंपरा के संत कृष्ण दास पयहारी के प्रशिष्य और भक्तकवि अग्रदास के शिष्य थे । इस तरह वे वैष्णवों के एक निश्चित संप्रदाय में दीक्षित थे, किंतु उनकी सोच और मान्यताओं में किसी तरह की संकीर्णता नहीं थी । पक्षपात, दुराग्रह या कट्टरता से वे पूर्णतया मुक्त एक भावुक, सहृदय, विवेकसंपन्न सच्चे वैष्णव थे । प्रसिद्ध कृति 'भक्तमाल' भक्तकवि नाभादास के शील, सोच और मानस का निर्मल दर्पण है । अविचल भगवद्भक्ति, भक्तचरित्र और भक्तों की स्मृतियाँ; नाभादास का अनुभव-सर्वस्व यही है । गार्हस्थ्य, सामाजिक-सांसारिक जीवन, विस्तृत और जटिल मानव संबंध इत्यादि का उन्हें अनुभव नहीं था । वे एक विरक्त जीवन जीते आए संत थे । स्पष्टत: उनके अनुभव के उस छोटे दायरे में ही उन्होंने अपनी अभिरुचि, ज्ञान, विवेक, भाव-प्रसार आदि के द्वारा प्रतिभा का प्रकर्ष उपस्थित कर दिया है । 'भक्तमाल' जिसकी आगे परंपरा चल पड़ी, यह प्रमाणित करता है ।

'भक्तमाल', जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, भक्त चरित्रों की माला है । उसमें नाभादास के पूर्ववर्ती और समवर्ती वैष्णव भक्तों के चरित वर्णित हैं । भक्तों के चयन में धर्म-संप्रदाय-जाति-लिंग और निर्गुण-सगुण आदि के विभेदकारी आग्रहों को महत्त्व न देते हुए केवल वैष्णवता को ही ध्यान में रखा गया है । यह वैष्णव भक्ति के अनुरूप ही है जिसमें

''जाति-पाँति पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि के होई'' जैसा क्रांतिकारी उद्घोष है । 'भक्तमाल' में वर्णित सभी भक्त कवि नहीं हैं, किंतु भक्तकवियों की संख्या कम नहीं है । संपूर्ण 'भक्तमाल' छप्पय छंद में निबद्ध है । छप्पय एक छंद है जो छह पंक्तियों का गेय पद होता है । इसमें 316 छप्पयों में 200 भक्तों के चरित वर्णित हैं । ये छप्पय नाभादास की तलस्पर्शिणी अंतर्दृष्टि, मर्मग्राहिणी प्रज्ञा, सारग्राही चिंतन और विदग्ध भाषा-शैली के नमूने हैं । इनके पीछे कवि के विशाल अध्ययन, सूक्ष्म पर्यवेक्षण, प्रदीर्घ मनन और अंतरंग अनुशीलन छिपे हुए हैं । ये छप्पय नाभादास की सहृदय आलोचनात्मक प्रतिभा के भी विशेष प्रमाण हैं । अनेक छप्पयों द्वारा मध्यकाल में ही आधुनिक अर्थों में हिंदी आलोचना का नाभादास ने न केवल बीजवपन किया था बल्कि सांकेतिक रूप में अग्रिम पथ-निर्देश भी कर दिया था । रीतिकाल के तथाकथित शास्त्रीय काव्यचिंतन को देखते हुए नाभादास का क्रांतिकारी महत्त्व स्पष्ट हो जाता है ।

यहाँ कबीर और सूर पर लिखे गए छप्पय 'भक्तमाल' से संकलित हैं । वैष्णव भक्ति की नितांत भिन्न दो शाखाओं के इन महान भक्तकवियों पर लिखे गए ये छंद ऊपर कही गई बातों के सटीक प्रमाण हैं । इन कवियों से संबंधित अब तक के संपूर्ण अध्ययन-विवेचन के सार-सूत्र इन छंदों में कैसे पूर्वकथित हैं यह देखना विस्मयकारी और प्रीतिकर है । ऐसा प्रतीत होता है, गोया आगे की शतियों में इन कवियों के अध्ययन-विवेचन की रूपरेखा जैसे तय कर दी गई हो ।

◆ ◆ ◆

"नाभादास ने भक्तों के परिचय में जिस समास शैली का परिचय दिया है, वह उनके गंभीर चिंतन-मनन का परिणाम है । जिन भक्तों का परिचय उन्होंने लिखा है उनकी रचना-शैली, काव्यकला, भक्ति पद्धति एवं अन्य विशिष्टताओं आदि को प्रायः एक ही छप्पय में कूट-कूटकर समाविष्ट कर दिया है ।

– विजयेंद्र स्नातक

भक्तमाल मध्ययुग के वैष्णव आंदोलन की रूपरेखा समझने के लिए सबसे अधिक प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है ।"

– माताप्रसाद गुप्त

छप्पय

कबीर

भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए ।
योग यज्ञ व्रत दान भजन बिनु तुच्छ दिखाए ।।
हिंदू तुरक प्रमान रमैनी सबदी साखी ।
पक्षपात नहिं बचन सबहिके हितकी भाषी ।।
आरूढ़ दशा है जगत पै, मुख देखी नाहीं भनी ।
कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षट दर्शनी ।

सूरदास

उक्ति चौज अनुप्रास वर्ण अस्थिति अतिभारी ।
वचन प्रीति निर्वही अर्थ अद्भुत तुकधारी ।।
प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरि लीला भासी ।
जन्म कर्म गुन रूप सबहि रसना परकासी ।।
विमल बुद्धि हो तासुकी, जो यह गुन श्रवननि धरै ।
सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ।

अभ्यास

छप्पय के साथ

1. नाभादास ने छप्पय में कबीर की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ? उनकी क्रम से सूची बनाइए ।
2. 'मुख देखी नाहीं भनी' का क्या अर्थ है ? कबीर पर यह कैसे लागू होता है ?
3. सूर के काव्य की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है ?
4. अर्थ स्पष्ट करें –
   (क) सूर कवित्त सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ।
   (ख) भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए ।
5. 'पक्षपात नहीं वचन सबहि के हित की भाषी ।' इस पंक्ति में कबीर के किस गुण का परिचय दिया गया है ?
6. कविता में तुक का क्या महत्त्व है ? इन छप्पयों के संदर्भ में स्पष्ट करें ।
7. 'कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है ?
8. कबीर ने भक्ति को कितना महत्त्व दिया ?

छप्पय के आस-पास

1. नाभादास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में विशेष जानकारी एकत्र करें ।
2. कबीर एक क्रांतिकारी कवि थे । आप दिगंत (भाग - 1) में इनके पद पढ़ चुके हैं । नाभादास द्वारा बताई गई विशेषताओं का साम्य उन पदों में ढूँढ़ें । इसी तरह सूर के पदों के साथ भी इन विशेषताओं का मिलान करें।
3. मीरा ने भी 'कुल की कानि' की परवाह नहीं की । कबीर और मीरा में समानताएँ और असमानताएँ क्या हैं ? विचार करते हुए बताएँ ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   तुच्छ, हित, पक्षपात, गुण, उक्ति
2. वाक्य प्रयोग द्वारा इन शब्दों का लिंग निर्णय करें–
   वचन, मुख्य, यज्ञ, अर्थ, कवि, बुद्धि
3. विमल में 'वि' उपसर्ग है । इस उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
4. पठित छप्पय से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
5. 'रसना' का पर्यायवाची शब्द लिखें ।

शब्द निधि

आरूढ़	:	सवार	भासी	:	आभासित हुई, प्रत्यक्ष हुई
दशाह्वै	:	दशा में होकर	रसना	:	जिह्वा
षटदर्शनी	:	षड्दर्शन, भारत के प्रसिद्ध छह दर्शन	परकासी	:	प्रकाशित किया
चौज	:	चमत्कार	तासुकी	:	उसकी
भनी	:	वर्णन की	श्रवणनि	:	कानों में
दिवि	:	दिव्य	शिरचालन	:	सिर डुलाना

भूषण

जन्म	:	1613 ।
निधन	:	1715 ।
जन्म-स्थान	:	तिकवाँपुर, कानपुर, उत्तरप्रदेश ।
पिता	:	रत्नाकर त्रिपाठी ।
उपनाम	:	भूषण, चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्रसाह ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी । आगे उपनाम भूषण इतना प्रसिद्ध हुआ कि मूलनाम विस्मृत हो गया ।
प्रमुख आश्रयदाता	:	छत्रपति शिवाजी, शिवाजी के पुत्र शाहूजी एवं पन्ना के बुंदेला राजा छत्रसाल ।
विशेष	:	रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि त्रिपाठी और मतिराम भूषण के भाई के रूप में जाने जाते हैं ।
कृतियाँ	:	शिवराज भूषण (384 छंदों में 105 अलंकारों का निरूपण और छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति करनेवाले मुक्तकों का संग्रह) । शिवा बावनी (52 मुक्तकों में छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान) । छत्रसाल दशक (10 छंदों में महाराज छत्रसाल की वीरता का यशोगान) । ये तीन कृतियाँ अप्राप्य हैं : भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास । कुछ स्फुट पद्य भी प्राप्त होते हैं ।

भूषण हिंदी कविता में रीतिकाल के एक प्रसिद्ध कवि हैं जिनका हिंदी जनता में बहुत सम्मान है । वे जातीय स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि हैं । वीर रस के इस महान कवि ने फड़कती हुई मुक्तक शैली में छत्रपति शिवाजी और बुंदेला वीर राजा छत्रसाल की वास्तविकता पर आधारित विरुदावलियाँ गाई हैं । ओज, पराक्रम और उत्साह से भरे हुए कवि भूषण के प्रवाहमय छंद हिंदी जनता के बीच शताब्दियों से चाव के साथ गाए जाते रहे हैं । उनकी लोकप्रियता का यह प्रमाण है कि जनमानस में भूषण वीर रस के पर्याय और प्रतिमूर्ति की तरह प्रतिष्ठित हैं । मध्यकाल में भाव-भाषा और अभिव्यक्ति के विविध क्षेत्रों और रूपों पर धर्म का रंग गहरा था । जातीय चेतना और भावना से धर्मभावना को विलग कर सकना सहज नहीं था । स्वभावतः भूषण की जातीय भावना भी इसका अपवाद नहीं थी । स्वयं सत्ताधारी शासक वर्ग अपने राजनीतिक चातुर्य, सूझ-बूझ एवं उदारता के बावजूद धार्मिक-जातीय भेद-बुद्धि से अनुप्राणित और चालित था । स्वभावतः मध्यकालीन काव्य को ऐतिहासिक तथ्यों के प्रकाश में ही देखना-परखना होगा और आज की धर्म-संप्रदाय-निरपेक्ष जनतांत्रिक दृष्टि से उसकी मूल्यवत्ता की पड़ताल और पहचान करनी होगी । महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी या छत्रसाल जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति अपने कार्यों से अपने युगों में ही लोकनायक बन चुके थे । जननायक की उनकी ऐतिहासिक छवि आज भी जनमानस में अक्षुण्ण रूप से प्रतिष्ठित है । स्वभावतः इनकी विरुदावलियाँ, प्रशस्तियाँ तथा उनके निर्माता कवि-लेखक जनता के बीच उसी तरह प्रतिष्ठित

हैं । आज भी लोग उसी तरह उनकी कृतियों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं । भूषण ऐसे ही एक लोकप्रेरक महान कवि हैं ।

रीतिकाल में रस-अलंकार-नायिकाभेद आदि का निरूपण करते हुए उदाहरण के रूप में कविता करनेवाले कवियों की लंबी परंपरा थी । ऐसे कवियों को 'आचार्य कवि' या 'रीतिबद्ध कवि' कहते हैं । भूषण एक रीतिबद्ध आचार्य कवि ही थे, किंतु अलंकार-निरूपण करते हुए उनका आचार्य रूप बहुत सफलता नहीं प्राप्त कर सका । उनके आचार्य रूप पर उनका कवि रूप भारी पड़ गया है और यह तथ्य उनके काव्य प्रेमियों के लिए सुखद है । रीतिकाल में शृंगार रस की प्रधानता थी, प्रायः सभी कवि शृंगार की कविता लिखते दिखलाई पड़ते हैं । इस प्रधान प्रवृत्ति और भाव-प्रवाह से अलग हटकर भूषण ने वीर रस को प्रमुखता दी और उसी के अनुरूप अपना स्वतंत्र पथ निर्मित किया । इससे भूषण की स्वाधीन चेतना, आत्मविश्वास और विशिष्ट स्वभाव का पता चलता है । उन्होंने कविता की भाषा तो ब्रजभाषा ही रखी किंतु उसमें शब्द, मुहावरे और रचना संबंधी प्रयोगों में विषय और भावों के अनुरूप स्वतंत्रता बरती ।

यहाँ भूषण के दोनों प्रिय नायकों—छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल—से संबंधित दो कवित्त दिए जा रहे हैं जिनमें उनके शौर्य का ओजस्वी बखान है ।

◆ ◆ ◆

“ भूषण रीतिवादी वीर काव्य परंपरा से अलग हटकर प्रभावशाली कविता रच सकते हैं । इसका कारण यह है कि वह अपने समय के लोकजीवन से कटे हुए नहीं थे । उनके सामने अनेक प्रकार के राजा और सामंत थे और इनमें वह शिवाजी की विशेषता पहचान सके थे । इसके सिवा उनके सामने रैयत भी थी :

"कढ़ि गई रैयत के मन की कसक सब
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की ।"

रैयत के मन की कसक का उन्हें पता था । औरंगजेब पर उनकी व्यंग्योक्तियाँ बहुत अच्छी राजनीतिक लोककविता की मिसालें हैं । ”

– रामविलास शर्मा

कवित्त

(1)

इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है ।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है ।
दावा द्रुम-दंड पर चीता मृग-झुंड पर,
भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है ।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है ।

(2)

निकसत म्यान ते मयूखैं, प्रलै-भानु कैसी,
फारै तम-तोम से गयंदन के जाल को ।
लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनि सी,
रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन की माल को ।
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करवाल को ।
प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को ।

अभ्यास

कवित्त के साथ

1. शिवा जी की तुलना भूषण ने किन-किन से की है ?
2. शिवा जी की तुलना भूषण ने मृगराज से क्यों की है ?
3. छत्रसाल की तलवार कैसी है ? वर्णन कीजिए ।
4. नीचे लिखे अवतरणों का अर्थ स्पष्ट करें –
   (क) लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनि सी,
   रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन की माल की ।
   (ख) प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
   कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को ।
5. भूषण रीतिकाल की किस धारा के कवि हैं, वे अन्य रीतिकालीन कवियों से कैसे विशिष्ट हैं ?
6. आपके अनुसार दोनों छंदों में अधिक प्रभावी कौन है और क्यों ?

कवित्त के आस-पास

1. प्रथम छंद में आए पौराणिक प्रसंगों के विषय में जानकारी प्राप्त करें । इसके लिए अपने मित्रों, शिक्षकों एवं आस-पास के बड़े-बुजुर्गों से मदद लें ।
2. भूषण शिवाजी एवं छत्रसाल दोनों के दरबार में रह चुके थे । इन दोनों के राज्य, सैन्य-संगठन, प्रशासन आदि के विषय में जानकारी एकत्र करें ।
3. भूषण एक दरबारी कवि थे, आप ऐसे ही पाँच अन्य कवियों की सूची बनाएँ, साथ ही उनके आश्रयदाताओं के नाम भी लिखें ।
4. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कविता में क्या अंतर है ? संक्षेप में बताएँ ।
5. भूषण वीर रस के अप्रतिम कवि हैं, हिंदी के वीर रस के अन्य कवियों के नाम मालूम करें और ऐसी कुछ रचनाओं का भी संकलन करें ।

भाषा की बात

1. प्रथम छंद में कौन सा रस है ? उसका स्थाई भाव क्या है ?
2. प्रथम छंद का काव्य गुण क्या है ?
3. द्वितीय छंद में किस रस की अभिव्यंजना हुई है ? उस रस का स्थाई भाव क्या है ?
4. प्रथम छंद में किन अलंकारों का प्रयोग हुआ है ?
5. 'लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनी सी'–इसमें कौन सा अलंकार है ?
6. दूसरे छंद से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
7. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   भानु, रुद्र, चीता, इंद्र, तम, तेज, मृग, काल, कंठ, भट

8. 'महाबाहु' में 'महा' उपसर्ग है, इस उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ।

9. 'छितिपाल' में 'पाल' प्रत्यय है, इस प्रत्यय से युक्त छह अन्य शब्द बनाएँ।

शब्द निधि

जिमि	:	जैसे
जँम	:	यम
बाड़व	:	बड़वाग्नि, समुद्र की आग
अंभ	:	जल
सदंभ	:	दंभ से भरा
पौन	:	हवा, पवन
बारिबाह	:	बादल
संभु	:	शंभु (शिव)
रतिनाह	:	कामदेव (रति के पति)
सहस्रबाहु	:	एक राजा जिसकी भुजाओं को परशुराम ने काट डाला था
राम द्विजराज	:	परशुराम (परशुराम को राम भी कहा गया है)
दावा	:	दावाग्नि, जंगल की आग
द्रुम दंड	:	वृक्षों की डालें
बितुंड	:	हाथी
मृगराज	:	पशुओं (मृगों) का राजा सिंह
मयूखैं	:	किरणें
प्रलै-भानु	:	प्रलयंकारी सूर्य
तम-तोम	:	अंधकार का समूह
गयंदनु	:	गयंद (हाथी) का बहुवचन रूप
बैरिन	:	बैरी (शत्रु) का बहुवचन रूप
रुद्रहि	:	रुद्र को, शिव का एक क्रोधयुक्त रूप
मुंडन की माल	:	मुंडों की माला
छितिपाल	:	भूपाल (पृथ्वी का पालन करनेवाला), राजा
करवाल	:	तलवार
प्रतिभट	:	शत्रु योद्धा
कटक	:	समूह, सेना
कटीले	:	काटने वाला
क्रेते	:	कितने
कालिका	:	देवी का कालिका रूप जिससे उन्होंने रक्तबीज का संहार किया था
किलकि	:	किलककर, प्रसन्नतापूर्वक, उल्लसित होकर
कलेऊ	:	कलेवा, भोजन
लाल	:	प्यारा

जयशंकर प्रसाद

नाम	:	जयशंकर प्रसाद ।
जन्म	:	1889 (माघ शुक्ल दशमी, संवत् 1946) ।
निधन	:	15 नवंबर 1937 में ।
जन्म-स्थान	:	वाराणसी ।
पिता	:	देवी प्रसाद साहु ।
पितामह	:	शिवरत्न साहु [सुरती (तंबाकू) बनाने के कारण 'सुंघनी साहु' के नाम से विख्यात] ।
शिक्षा	:	आठवीं तक । संस्कृत, हिंदी, फारसी, उर्दू की शिक्षा घर पर नियुक्त शिक्षकों द्वारा ।
विशेष परिस्थिति	:	बारह वर्ष की अवस्था में पितृविहीन, दो वर्ष बाद माता की भी मृत्यु । परिवार में गृहकलह की स्थिति । ज्येष्ठ भ्राता शंभु रतन की मृत्यु से संकट की स्थिति उत्पन्न, सभी उत्तरदायित्व प्रसाद जी के कंधों पर ।
रचनाएँ	:	कलाधर उपनाम से ब्रजभाषा में सवैयों की रचना, प्रसाद की प्रेरणा से उनके भांजे अंबिका प्रसाद ने इंदु का प्रकाशन 1909 से प्रारंभ किया, कालक्रम के अनुसार चित्राधार प्रथम संग्रह, जिसमें कविता, कहानी, नाटक आदि रचनाएँ संकलित । काव्य संकलन : झरना (1918), आँसू (1925), लहर (1933), अतुकांत रचनाएँ : महाराणा का महत्त्व, करुणालय, प्रेम पथिक । प्रबंध काव्य : कामायनी (1936) नाटक : कल्याणी परिणय (1912), प्रायश्चित (1914), राज्यश्री (1915), विशाख (1929), कामना (1927) जन्मेजय का नागयज्ञ (1926), स्कंदगुप्त (1926), एक घूँट (1928), चंद्रगुप्त (1931), ध्रुवस्वामिनी (1933) । कथा संग्रह : छाया (1912), प्रतिध्वनि (1931), इंद्रजाल (1936) । उपन्यास : कंकाल (1929), तितली (1934), इरावती (अपूर्ण, 1940) ।

आधुनिक हिंदी की स्वच्छंद काव्यधारा के अंतर्गत छायावादी काव्य प्रवाह के प्रवर्तकों में जयशंकर प्रसाद वरिष्ठ थे । 'छायावाद' हिंदी की आधुनिक कविता में स्वच्छंदतावाद के ही एक विशिष्ट रूप को कहते हैं । इस विशिष्ट भावधारा में व्यक्तिचेतना, स्वानुभूति, प्रकृति-साहचर्य, उन्मुक्त प्रेम, कल्पनाशीलता, स्वातंत्र्यभावना आदि नवीन भावों की उत्कट चेतना थी और अभिव्यक्ति पद्धति में लाक्षणिकता, चित्रात्मकता, अमूर्तन, रहस्यात्मकता, दार्शनिकता, सांगीतिकता आदि का आग्रह था । छायावादी काव्यभाषा भी अभिव्यक्ति के अनुरूप तत्सम प्रधान, संस्कृतनिष्ठ और नवीन थी । काव्यभाषा और अभिव्यक्ति पद्धति में परंपरा के जर्जर, विगलित रूपों तथा रूढ़ियों का निषेध तथा एक ऐसी सर्जनात्मक मौलिकता थी जिसमें बहुविध नवाचार झलकते थे । वास्तव में छायावाद की काव्यभाषा और अभिव्यक्ति पद्धति में परंपरा का पूर्ण निषेध न होकर जैसे उसका पुनर्जन्म था, उसमें परंपरा की नवीन स्मृति थी । जयशंकर प्रसाद का साहित्य इन तथ्यों का प्रामाणिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है ।

जयशंकर प्रसाद न केवल एक महान छायावादी कवि थे बल्कि वे एक महान नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निबंधकार भी थे । इन विधाओं और साहित्यरूपों में उनका युगांतरकारी अवदान है । कवि के रूप में उन्होंने आरंभ में ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं किंतु शीघ्र ही उन्होंने काव्य रचना के लिए युगानुरूप नई साहित्यिक भाषा–खड़ी बोली हिंदी अपना ली । कविता के क्षेत्र में उन्होंने गीत, प्रगीत, लंबी प्रबंधात्मक कविताएँ आदि शैली रूपों की रचनाएँ प्रस्तुत कीं । किंतु उनका सर्वश्रेष्ठ अवदान है-'कामायनी'। 'कामायनी' समग्ररूप में 'छायावाद' की प्रतिनिधि और उत्कृष्ट काव्य कृति तो है ही; वह आधुनिक हिंदी का श्रेष्ठतम महाकाव्य भी है । इसमें प्रलय के बाद मानवीय सृष्टि के विकास की पौराणिक कथा का आश्रय लेकर मनुष्य के मानसिक-आध्यात्मिक विकास के संक्षिप्त इतिवृत्त को बड़े अर्थपूर्ण संकेतों द्वारा प्रस्तुत किया गया है । कश्मीरी शैव दर्शन की पृष्ठभूमि में इस महाकाव्य में कवि का जीवन दृष्टिकोण भी बड़े प्रभावशाली रूप में व्यक्त हो सका है । स्वभावत: 'कामायनी' में आधुनिक मानव सभ्यता की मार्मिक समीक्षा भी हो गई है ।

'कामायनी' से लिए गए प्रस्तुत अंश में महाकाव्य की नायिका श्रद्धा, जो वस्तुत: स्वयं कामायनी है, आत्मगान प्रस्तुत करती है । इस गान में श्रद्धा (जो वस्तुत: विश्वासपूर्ण आस्तिक बुद्धि है जिसके द्वारा विकासगामी ज्ञान एवं आत्मबोध प्राप्त हो पाता है) विनम्र स्वाभिमान से भरे स्वर में अपना परिचय देती है; अपने सत्ता-सार का व्याख्यान करती है । प्रकारांतर से यह नारीमात्र का परिचय और महिमागान हो जाता है ।

◆ ◆ ◆

> **"प्रसाद जी के पास ऐतिहासिक बुद्धि थी । वे मानव-भाग्य के संबंध में दार्शनिक दृष्टिकोण से तो चिंतन करते ही थे, समाज और जाति के भाग्य के संबंध में भी उन्हें सोचना पड़ा । मानव सभ्यता संबंधी प्रश्नों पर उनका चिंतन बराबर चलता था । उनको समाज और जाति ने अर्थात आधुनिक जीवन-जगत ने जो दृष्टि प्रदान की–वह थी राष्ट्रवादी सांस्कृतिक अभ्युत्थान से प्रेरित । उन्होंने अतीत के गौरवमय चित्र उपस्थित कर इस राष्ट्रीय सांस्कृतिक अभ्युत्थान में योग दिया ।"**

– मुक्तिबोध

तुमुल कोलाहल कलह में

तुमुल कोलाहल कलह में
मैं हृदय की बात रे मन !

विकल होकर नित्य चंचल,
खोजती जब नींद के पल;
चेतना थक सी रही तब,
मैं मलय की वात रे मन !

चिर-विषाद विलीन मन की
इस व्यथा के तिमिर वन की;
मैं उषा सी ज्योति रेखा,
कुसुम विकसित प्रात रे मन !

जहाँ मरु ज्वाला धधकती,
चातकी कन को तरसती;
उन्हीं जीवन घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन!

पवन की प्राचीर में रुक,
जला जीवन जा रहा झुक;
इस झुलसते विश्व-वन की,
मैं कुसुम ऋतु रात रे मन !

चिर निराशा नीरधर से,
प्रतिच्छायित अश्रु सर में;
मधुप मुखर मरंद मुकुलित,
मैं सजल जलजात रे मन !

अभ्यास

कविता के साथ

1. 'हृदय की बात' का क्या कार्य है ?
2. कविता में उषा की किस भूमिका का उल्लेख है ?
3. चातकी किसके लिए तरसती है ?
4. बरसात को 'सरस' कहने का क्या अभिप्राय है ?
5. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें –

   पवन की प्राचीर में रुक,
   जला जीवन जा रहा झुक,
   इस झुलसते विश्व-वन की,
   मैं कुसुम ऋतु रात रे मन !

6. 'सजल जलजात' का क्या अर्थ है ?
7. कविता का केंद्रीय भाव क्या है ? संक्षेप में लिखिए।
8. कविता में 'विषाद' और 'व्यथा' का उल्लेख है, यह किस कारण से है, अपनी कल्पना से उत्तर दीजिए।
9. यह श्रद्धा का गीत है जो नारीमात्र का गीत कहा जा सकता है। सामान्य जीवन में नारियों की जो भूमिका है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कविता में कही गई बातें उसपर घटित होती हैं ? विचार कीजिए और गृहस्थ जीवन में नारी के अवदान पर एक छोटा निबंध लिखिए।
10. इस कविता में स्त्री को प्रेम और सौंदर्य का स्रोत बताया गया है। आप अपने पारिवारिक जीवन के अनुभवों के आधार पर इस कथन की परीक्षा कीजिए।

कविता के आस-पास

1. इस कविता से भाव-साम्य रखनेवाली अन्य कविताएँ उपलब्ध कीजिए।
2. जयशंकर प्रसाद की कहानियों को पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें।
3. प्रसाद जी की प्रतिभा अप्रतिम थी। कविता के अतिरिक्त कहानी, नाटक और उपन्यास विधा को भी उन्होंने समृद्ध किया। हिंदी साहित्य को जयशंकर प्रसाद के अवदान पर शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें।
4. दिगंत (भाग-1) में नरेश सक्सेना की कविता 'पृथ्वी' दी गई है। उस कविता में भी पृथ्वी के बहाने स्त्री का महिमागान है। उस कविता से इस कविता की तुलना कीजिए।
5. इस पाठ्य अंश को आशा भोंसले गा चुकी हैं। कैसेट उपलब्ध कर सुनें और अपनी प्रतिक्रिया लिखें।

भाषा की बात

1. पठित कविता के संदर्भ में प्रसाद की काव्यभाषा पर टिप्पणी लिखें।
2. कविता से रूपक अलंकार के उदाहरण चुनें।
3. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाएँ –

   कुसुम, हृदय, व्यथा, बरसात, विश्व, दिन, रेखा

शब्द निधि

तुमुल कोलाहल	:	अत्यधिक हो-हल्ला	मधुप	:	भौंरा
विकल	:	अशांत (कल-शांति से रहित)	मरंद	:	मकरंद, मधु, सुगंध, पराग
मलय की वात	:	मलयाचल से चलनेवाली हवा	प्रतिच्छायित	:	आच्छादित, छाया हुआ
तिमिर	:	अंधकार	मुकुलित	:	कलियों से गदराया हुआ
प्राचीर	:	ऊँची चहारदीवारी	जलजात	:	कमल, जलज
नीरधर	:	बादल			

सुभद्रा कुमारी चौहान

जन्म	:	16 अगस्त 1904 ।
निधन	:	15 फरवरी 1948, बसंत पंचमी के दिन नागपुर से जबलपुर वापसी में कार दुर्घटना में ।
जन्म-स्थान	:	निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश ।
माता-पिता	:	श्रीमती धिराज कुँवर एवं ठाकुर रामनाथ सिंह ।
पति	:	ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान, खंडवा, मध्य प्रदेश निवासी से 1919 में विवाह । ठाकुर लक्ष्मण सिंह अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त 'कुली प्रथा' और 'गुलामी का नशा' नामक नाटकों के लेखक, प्रसिद्ध पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और काँग्रेसी नेता थे ।
शिक्षा	:	क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल, इलाहाबाद में प्रारंभिक शिक्षा । इसी स्कूल में प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ थीं । पुन: थियोसोफिकल स्कूल, वाराणसी में वर्ग 9 तक की पढ़ाई के बाद शिक्षा अधूरी छोड़कर असहयोग आंदोलन में कूद पड़ीं ।
प्रधान कर्मक्षेत्र	:	समाज सेवा, राजनीति, स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय भागीदारी, अनेक बार कारावास, मध्य प्रदेश में काँग्रेस पार्टी की एम. एल. ए. ।
विशिष्ट अभिरुचि	:	छात्र जीवन से ही काव्य रचना की प्रवृत्ति, आगे चलकर प्रमुख कवयित्री एवं साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा ।
कृतियाँ	:	'मुकुल' (कविता संग्रह, 1930), त्रिधारा (कविता चयन), बिखरे मोती (कहानी संग्रह), सभा के खेल (कहानी संग्रह) ।
पुरस्कार	:	'मुकुल' पर 1930 में 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' का 'सेकसरिया पुरस्कार' ।

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की छायावादी काव्यधारा के समानांतर स्वतंत्र रूप से काव्यरचना करने वाली राष्ट्रीय भाव धारा की प्रमुख और विशिष्ट कवयित्री थीं । राष्ट्रीय भावधारा का भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से अभिन्न संबंध था । इस भावधारा का उन्मेष भारतेंदु युग में ही हुआ था । द्विवेदी युग में इसका विकास हुआ तथा उसके बाद के युगों में यह भावधारा अनेक दिशाओं में फैलती हुई व्यापक और बहुमुखी होकर उत्कर्ष पर पहुँच गई । स्वतंत्रता आंदोलन, सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक सुधार एवं परिवर्तन की व्यापक चेतना के साथ यह भावधारा उत्तरोत्तर गहरी, एकाग्र और उन्मुख होती गई । इसके राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आशय निखरते और स्पष्ट होते गए । उनमें एक दृढ़ता, जनतांत्रिक वैचारिकता और उत्सर्ग भावना बढ़ती चली गई । केवल भावुकता की उच्छल अभिव्यक्ति से आगे बढ़कर तथा स्वप्नों-संकल्पों से कहीं अधिक, इस भावधारा में सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ की प्रेरणाएँ और आग्रह बढ़ते चले गए । राष्ट्रीय भावधारा के इस यथार्थोन्मुख रूप से सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता का घनिष्ठ संबंध है । उनकी कविता की केंद्रीय और प्रमुख प्रेरणा यथार्थनिष्ठ राष्ट्रीय भावधारा ही है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान के निजी, पारिवारिक, सामाजिक-राजनीतिक और सार्वभौम मानववादी भाव-पटलों एवं जीवन-रूपों की एक ही मूल-प्रेरणा, एक ही लक्ष्य और एक ही रंग दिखलाई पड़ता है–राष्ट्रीय स्वतंत्रता । इसी का अकृत्रिम या स्वाभाविक आवेगमय स्वर उनके जीवन और काव्य को मुखर रूप में एक और अखंड कर देता है । यह गुण या विशेषता उन्हें अपने समकालीन कवियों के बीच विशिष्ट बनाती है । क्रांतिकारी युवाओं की तरह राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व होम कर देने तथा मर-मिट जाने का एक ही मंत्र, एक ही बल और एक ही सर्वग्रासी प्रेरणा उनके जीवन और काव्य के अविलग-अखंड संसार से बवंडर या आँधी की तरह उठती है और चारों ओर जैसे छा जाती है । चिंतक कवि मुक्तिबोध ने उचित कहा है कि ''सुभद्रा जी के साहित्य में अपने युग के मूल उद्वेग, उसके भिन्न-भिन्न रूप, अपनी आभरणहीन प्रकृत शैली में प्रकट हुए हैं ।''

सुभद्रा जी के प्रतिनिधि काव्य संकलन 'मुकुल' से यहाँ ली गई प्रस्तुत कविता निराला की 'सरोज स्मृति' के बाद हिंदी में एक दूसरी शोकगीति है जो पुत्र के असामयिक निधन के बाद कवयित्री माँ के द्वारा लिखी गई है । स्वभावतः 'सरोज स्मृति' की तरह लंबी न होने तथा घटनामूलक कथा संदर्भों के अभाव के कारण इस शोकगीति में व्यापक यथार्थ संदर्भ नहीं हैं ; किंतु पुत्र के असमय निधन के बाद पीछे तड़पते रह गए माँ के हृदय के निदारुण शोक की ऐसी सादगी भरी अभिव्यक्ति है जो निर्वैयक्तिक और सार्वभौम होकर अमिट रूप में काव्यत्व अर्जित कर लेती है । इसमें एक माँ के विषादमय शोक का एक साथ धीरे-धीरे गहराता और ऊपर-ऊपर आरोहण करता हुआ भाव उत्कटता अर्जित करता जाता है तथा कविता के अंतिम छंद में पारिवारिक रिश्तों के बीच माँ-बेटे के संबंध की एक विलक्षण आत्म-प्रतीति में स्थाई परिणति पाता है ।

''तेरा स्मारक तू ही होगी
तू खुद अमिट निशानी थी......''

◆ ◆ ◆

“हम उनके असली स्वरूप को याद रखें कि वह हमारी भावना के भारत की 'पहली बसंतपंचमी' – भारतीय आंदोलन की वीर स्त्रियों में पहली सत्याग्रही–और हिंदी भारती की पहली कोकिला थीं, जिनकी स्वर-लहरियाँ 'चकबस्त' और 'इकबाल' के राष्ट्रीय तरानों के साथ हमेशा-हमेशा के लिए जन-गन-मन में घुल-मिल गई हैं ।”

– शमशेर बहादुर सिंह

पुत्र वियोग

आज दिशाएँ भी हँसती हैं
है उल्लास विश्व पर छाया,
मेरा खोया हुआ खिलौना
अब तक मेरे पास न आया ।

शीत न लग जाए, इस भय से
नहीं गोद से जिसे उतारा
छोड़ काम दौड़ कर आई
'मा' कहकर जिस समय पुकारा ।

थपकी दे दे जिसे सुलाया
जिसके लिए लोरियाँ गाईं,
जिसके मुख पर जरा मलिनता
देख आँख में रात बिताई ।

जिसके लिए भूल अपनापन
पत्थर को भी देव बनाया
कहीं नारियल, दूध, बताशे
कहीं चढ़ाकर शीश नवाया ।

फिर भी कोई कुछ न कर सका
छिन ही गया खिलौना मेरा
मैं असहाय विवश बैठी ही
रही उठ गया छौना मेरा ।

तड़प रहे हैं विकल प्राण ये
मुझको पल भर शांति नहीं है
वह खोया धन पा न सकूँगी
इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है ।

फिर भी रोता ही रहता है
नहीं मानता है मन मेरा
बड़ा जटिल नीरस लगता है
सूना सूना जीवन मेरा ।

यह लगता है एक बार यदि
पल भर को उसको पा जाती
जी से लगा प्यार से सर
सहला सहला उसको समझाती ।

मेरे भैया मेरे बेटे अब
माँ को यों छोड़ न जाना
बड़ा कठिन है बेटा खोकर
माँ को अपना मन समझाना ।

भाई-बहिन भूल सकते हैं
पिता भले ही तुम्हें भुलावे
किंतु रात-दिन की साथिन माँ
कैसे अपना मन समझावे !

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवयित्री का 'खिलौना' क्या है ?
2. कवयित्री स्वयं को असहाय और विवश क्यों कहती हैं ?
3. पुत्र के लिए माँ क्या-क्या करती है ?
4. अर्थ स्पष्ट करें –

    आज दिशाएँ भी हँसती हैं
    है उल्लास विश्व पर छाया,
    मेरा खोया हुआ खिलौना
    अब तक मेरे पास न आया ।

5. माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन है और क्यों ?
6. पुत्र को 'छौना' कहने में क्या भाव छुपा है, उसे उद्घाटित करें ।
7. मर्म उद्घाटित करें –

भाई बहिन भूल सकते हैं
पिता भले ही तुम्हें भुलावे
किंतु रात-दिन की साथिन माँ
कैसे अपना मन समझावे !

8. कविता का भावार्थ संक्षेप में लिखिए ।
9. इस कविता को पढ़ने पर आपके मन पर क्या प्रभाव पड़ा, उसे लिखिए ।

कविता के आस-पास

1. सुभद्रा जी ने कहानियाँ भी लिखी हैं, इनकी कहानियों को उपलब्ध कर पढ़ें ।
2. प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु पर 'सरोज स्मृति' शीर्षक से एक अत्यंत मार्मिक शोकगीति लिखी थी । निराला की इस रचना को उपलब्ध करें, अपनी कक्षा में इसका पाठ करें और इस पर अपने मित्रों व शिक्षक से चर्चा करें ।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान ने वीर रस की अनेक कविताएँ लिखी हैं, दिगंत (भाग – 1) में 'आँखों देखा गदर' पाठ के अभ्यास में उनकी कविता दी गई है । आप उसे भी पढ़ें, इसके अतिरिक्त सुभद्रा जी ने वात्सल्य और प्रेमपरक अनेक कविताएँ लिखी हैं । राष्ट्रीय भावधारा से संबंधित उनकी एक कविता यहाँ दी जा रही है –इसका भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए ।

जलियाँवाले बाग में वसंत

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते ।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते ॥
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक कुल से ।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे ॥

परिमल हीन पराग दाग सा बना पड़ा है ।
हाँ ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है ॥
आओ प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे से आना ।
यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना ॥

वायु चले पर मंद चाल से उसे चलाना ।
दुख को आहें संग उड़ाकर मत ले जाना ॥
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे ।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे ॥

लाना संग में पुष्प, न हो वे अधिक सजीले ।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले ॥
किंतु न तुम उपहार भाव आकर दरसाना ।
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना ॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ॥
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ॥
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किंतु
बहुत धीरे से आना ।
यह है शोक स्थान
यहाँ मत शोर मचाना ॥

4. आप अपनी ओर से रिक्त पंक्तियों को पूरा करें –

(क) आज दिशाएँ भी हँसती हैं
है उल्लास विश्व पर छाया
....
....

(ख) मेरे भैया, मेरे बेटे, अब
माँ को यों छोड़ न जाना
....
....

भाषा की बात

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यभाषा पर एक टिप्पणी लिखें ।
2. कविता से सर्वनाम पदों को चुनें ।
3. 'मलिनता' में 'ता' प्रत्यय है, 'ता' प्रत्यय के योग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
4. इनके विपरीतार्थक शब्द लिखें –
मलिनता, देव, असहाय, जटिल, नीरस, कठिन, विकल
5. वाक्य प्रयोग द्वारा इन मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करें –
(क) आँखों में रात बिताना (ख) शीश नवाना
6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखें –
गोद, छौना, बहन, विश्व, दूध
7. 'उल्लास' का संधि-विच्छेद करें ।

शब्द निधि

छौना : बेटा, हिरण आदि पशु का छोटा बच्चा, शावक

शमशेर बहादुर सिंह

जन्म	:	13 जनवरी 1911 ।
निधन	:	1993 ।
जन्म-स्थान	:	देहरादून, उत्तराखंड ।
माता-पिता	:	प्रभुदेई एवं तारीफ सिंह (कलेक्ट्रिएट में रीडर और साहित्य प्रेमी) ।
शिक्षा	:	1928 में हाई स्कूल, 1931 में इंटर, 1933 में बी० ए० (इलाहाबाद से), 1938 में एम० ए० (पूर्वार्ध) अंग्रेजी, आगे पढ़ाई न चल सकी ।
पारिवारिक जीवन	:	1929 में धर्म देवी से विवाह । 1933 में पत्नी की मृत्यु । फिर परिवार विहीन अनिश्चित जीवन ।
वृत्ति	:	रूपाभ, कहानी, माया, नया साहित्य, नया पथ एवं मनोहर कहानियाँ के संपादन कार्य से जुड़े । उर्दू-हिंदी कोश का भी संपादन । 1981-85 तक 'प्रेमचंद सृजनपीठ' विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के अध्यक्ष ।
यात्रा	:	1978 में सोवियत रूस की यात्रा।
कृतियाँ	:	1932-33 में लिखना शुरू किया । दूसरा सप्तक (1951), कुछ कविताएँ (1959), कुछ और कविताएँ (1961), चुका भी नहीं हूँ मैं (1975), इतने पास अपने (1980), उदिता (1980), बात बोलेगी (1981), काल तुझसे होड़ है मेरी (1982), टूटी हुई बिखरी हुई, कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ, सुकून की तलाश (गजलें) । प्रतिनिधि कविताएँ (सं०-डॉ० नामवर सिंह) – सभी कविताएँ । डायरी, विविध प्रकार के निबंध एवं आलोचना भी फुटकर रूप में प्रकाशित ।

अज्ञेय, नागार्जुन आदि के समकालीन शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक हिंदी कविता में स्वच्छंद चेतना के प्रयोगशील कवि के रूप में 'दूसरा सप्तक' में उदित हुए थे । बीसवीं शती के उत्तरार्ध में सतत प्रयोगधर्मी श्रेष्ठ प्रगतिशील कवि के रूप में उन्होंने व्यापक प्रतिष्ठा अर्जित की । उन्होंने लिखना तीस के दशक में ही शुरू कर दिया था किंतु आजीविका, आवास, पारिवारिक जीवन आदि के अनिश्चय, अभाव तथा प्रकाशन को लेकर उदासीनता भरे विशिष्ट स्वभाव के कारण उनकी कविताएँ पुस्तकाकार शती के उत्तरार्ध में ही आनी शुरू हुईं । शीघ्र ही शमशेर बहादुर सिंह हिंदी के विशिष्ट और प्रमुख कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो गए । विशिष्टता उनके लेखन में कवि और काव्य के स्वभाव एवं आग्रहों के कारण निरूपित हुई । वे कवि और शायर एक साथ थे । स्वच्छंदतावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता तथा वस्तुवादी यथार्थवाद और कलावादी रूपवाद – इन सबका एक ऐसा विलक्षण घोल उन्होंने अपनी सर्जनात्मकता में तैयार किया जिसमें इन सब की सीमाएँ नहीं, शक्ति सक्रिय और मुखरित हुई । हिंदी और उर्दू को तथा इनकी कविता शैलियों और संस्कृतियों को उन्होंने एक माना ही नहीं, जाना और अनुभव भी किया । कवि के लिए दोनों दो नहीं, एक हैं; इसी रूप में शमशेर के यहाँ उनकी अभिव्यक्ति भी होती है । भेद है सिर्फ शैली का; ऊपरी । भीतरी एकता अखंड और अक्षुण्ण है । उर्दू काव्य और आधुनिक हिंदी काव्य की विरासत को उन्होंने मिजाज, रंग, स्वर, लय और

भंगिमाओं के साथ अपनी खास संवेदना और कल्पनाशीलता के सहारे अपने ढंग से आत्मसात् किया। उनके समकालीन जहाँ 'छायावाद' से खुद को विलगाने और अलग-थलग, विशिष्ट दिखने के प्रति आग्रहशील रहे वहाँ शमशेर ने एक ही संधान में निराला और पंत दोनों को साधा। कविता, चित्र, संगीत, नाटक, नृत्य, मूर्ति आदि विविध कलाओं के सर्जनात्मक प्रभाव उन्होंने अपनी कविता की स्वायत्त जमीन और शर्तों पर ग्रहण किए। स्थानीय और सार्वभौम, क्षणिक और सनातन, जटिल और सरल, ठोस और वायवीय, मूर्त और अमूर्त, ऐंद्रिय और आध्यात्मिक–तमाम तरह के विरोधों को अपने विलक्षण वस्तु विधान और ऐंद्रिय संस्पर्श के साथ, कल्पना प्रवण अनुभूति के रंग में डुबोकर एक सजीव संरचना में ढाल देते हैं। उनमें अद्‌भुत कला संयम, संक्षिप्ति और सांकेतिकता है। उनकी कविताएँ एक अनिवार्य चुनौती की तरह दिपदिपाती रहती हैं, ऐसी चुनौती जिसे नजरअंदाज करना मुश्किल हो। वे कई-कई पाठों में भी अक्सर निःशेष नहीं होतीं। उनमें कुछ चमकता रह जाता है जो अर्थपूर्ण प्रतीत होता है। प्रायः उनके समकालीनों से लेकर अब तक के सभी महत्त्वपूर्ण आलोचकों और चिंतनशील सर्जकों ने उनपर अवश्य लिखा है और उनकी कविता को समझने-समझाने की कोशिशें की हैं। वे 'कवियों के कवि' कहे जाते हैं।

यहाँ उनकी प्रसिद्ध कविता 'उषा' संकलित है जिसमें उन्होंने 'उषा' का गतिशील चित्रण बिंबों द्वारा प्रस्तुत किया है। यह चित्रण एक प्रभाववादी चित्रकार की तरह किया गया है। प्रभाववादी चित्रकार वस्तु या दृश्य के मन और संवेदना पर पड़े प्रभावों का उनकी विशिष्ट रंग-रेखाओं के सहारे चित्रण करता है। उषा में एक जादू है जिसमें विमुग्ध-तल्लीन कविदृष्टि उसके साथ-साथ बढ़ती और उसे सजग ऐंद्रियबोध और मानस में जज्ब करती जाती है। कविता का समापन इस जादू से गुजरते हुए बाहर निकल आने पर होता है। उषा के साथ-साथ क्रमशः चलती यह यात्रा एक संतृप्तिकर सौंदर्य यात्रा हो जाती है।

◆ ◆ ◆

> **"शमशेर ऐसे कवि हैं जो अपना असर धीरे-धीरे डालते हैं। शमशेर जैसे कवियों का कोई 'स्कूल' नहीं बनता, उनकी कोई पंथ-प्रतिमा नहीं बनती। वे उन नदियों की तरह होते हैं जो चुपचाप पूरी घाटी को जरखेज करती चलती हैं, जिनपर कभी कोई पुल नहीं बनता।"**
>
> **– अरुण कमल**

उषा

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका
[अभी गीला पड़ा है]

बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो ।

और....

जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. प्रातः काल का नभ कैसा था ?
2. 'राख से लीपा हुआ चौका' के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है ?
3. बिंब स्पष्ट करें–

   'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो'
4. उषा का जादू कैसा है ?
5. 'लाल केसर' और 'लाल खड़िया चाक' किसके लिए प्रयुक्त है ?
6. व्याख्या करें–

   (क) जादू टूटता है इस उषा का अब
   सूर्योदय हो रहा है

   (ख) बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
   कि जैसे धुल गई हो
7. इस कविता की बिंब योजना पर टिप्पणी लिखें ।
8. प्रात नभ की तुलना बहुत नीला शंख से क्यों की गई है ?
9. नील जल में किसकी गौर देह हिल रही है ?
10. कविता में आरंभ से लेकर अंत तक की बिंब-योजना में गति का चित्रण कैसे हो सका है ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. कवि की पाँच अन्य कविताएँ संकलित करें एवं कक्षा में उनका पाठ करें ।
2. शमशेर बहादुर सिंह बिंबों और मितकथनों के लिए प्रसिद्ध हैं, उनकी कविताओं से ऐसे कुछ उदाहरण चुनें और मित्रों से इस पर चर्चा करें । इसके लिए आप पुस्तकालय एवं अपने शिक्षक की मदद लें ।
3. उषा काल पर जयशंकर प्रसाद की एक प्रसिद्ध कविता **'बीती विभावरी जाग री'** और अशोक वाजपेयी की एक गद्य कविता **'सुबह'** यहाँ दी जा रही हैं । इन्हें भी पढ़ें और प्रस्तुत कविता से इनकी तुलना करें ।

बीती विभावरी जाग री !
अंबर पनघट में डुबो रही
तारा-घट उषा-नागरी
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा
लो यह लतिका भी भर लाई
मधु मुकुल नवल रस गागरी ।
अधरों में राग अमंद पिए,

अलकों में मलयज बंद किए
तू अब तक सोई है आली !
आँखों में भरे विहाग री !

सुबह

सुबह थी । उजाले, हलकी सुगबुगाहट और जागरण के साथ । पर सबके लिए नहीं । घूमनेवाले अधेड़ों, स्कूल जानेवाले बच्चों के लिए थी : चिड़ियों-तोतों के लिए थी और शायद दूर तक फैली हुई हरियाली के लिए । वनस्पतियों और वृक्षों को भी शायद पता था कि सुबह हो गई है । पर मेज को, गिलासों-तश्तरियों को, कागजों के पुलिंदों और गरम मसालों को कहाँ पता था कि सुबह है । उन्हें कभी पता नहीं चलता । अचार को कोई नहीं बताता कि सुबह हो गई है और उसे कुछ करना चाहिए–उदाहरण के लिए कुछ देर तेल-नमक से बाहर घूम आना चाहिए । मिट्टी के गहरे अँधेरे में डूबी जड़ें नहीं जान पातीं कि ऊपर-बाहर धूप खिल रही है । सुबह सबकी सुबह नहीं है : कुछ के लिए कभी सुबह नहीं है । कुछ के लिए कोई सुबह नहीं है । समय भी सबके लिए नहीं है । कुछ समय के घेरे से ऐसे बाहर पड़े रहते हैं जैसे हों ही न । या कि समय ही न हो ।

4. 'उषा' का अंकन आप किस तरह करना चाहेंगे । कविता, निबंध या फिर फोटोग्राफी के द्वारा; इसे विद्यालय के सूचना पट्ट पर लगाएँ ।
5. 'सुबह की सैर' विषय पर एक छोटा निबंध लिखकर अपने शिक्षक को दिखाएँ । निबंध में आपके अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए ।

भाषा की बात

1. कविता से संयुक्त क्रियाओं को चुनें ।
2. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाएँ–
   नभ, राख, चौका, देह, उषा ।
3. व्युत्पत्ति की दृष्टि से इन शब्दों की प्रकृति बताएँ–
   नीला, शंख, भोर, चौका, स्लेट, जल, गौर, देह, जादू, उषा ।
4. कविता में प्रयुक्त उपमानों को चुनें ।
5. सूर्योदय का संधि-विच्छेद करें ।

शब्द निधि

सिल : पत्थर की पट्टी जिस पर मसाला पीसा जाता है

खड़िया : खल्ली, जिससे स्लेट पर लिखा जाता है

चौका : वह स्थान जहाँ रसोई बनती है । उसे राख, गोबर, मिट्टी आदि से लीपा जाता है । गाँव के घरों में ऐसे चौके मिल जाते हैं ।

गजानन माधव मुक्तिबोध

जन्म	:	13 नवंबर 1917 ।
निधन	:	11 सितंबर 1964 ।
जन्म-स्थान	:	श्योपुर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश ।
माता-पिता	:	पार्वती बाई एवं माधवराज मुक्तिबोध ।
शिक्षा	:	उज्जैन, विदिशा, अमझरा, सरदारपुर आदि स्थानों पर प्रारंभिक शिक्षा । 1930 में उज्जैन के माधव कॉलेज से ग्वालियर बोर्ड की मिडिल परीक्षा में असफल । पुन: 1931 में सफलता प्राप्त । 1935 में माधव कॉलेज से इंटरमीडिएट । 1937 में इंदौर के होल्कर कॉलेज से बी० ए० में असफल । पुन: 1938 में सफलता प्राप्त । 1953 में नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम० ए० ।
वृत्ति	:	20 वर्ष की छोटी उम्र में बड़नगर मिडिल स्कूल से मास्टरी आरंभ । तत्पश्चात शुजालपुर, उज्जैन, कोलकाता, इंदौर, मुंबई, बंगलौर, बनारस, जबलपुर आदि स्थानों पर भिन्न-भिन्न नौकरियाँ–मास्टरी से वायुसेना, पत्रकारिता से पार्टी तक । 1948 में नागपुर आए । नागपुर के प्रकाशन तथा सूचना विभाग में पत्रकार के रूप में अक्टूबर 1948 से सितंबर 1965 तक रहे । फिर नागपुर में ही रेडियो के हिंदी प्रादेशिक सूचना विभाग में अक्टूबर 1954 से अक्टूबर 1956 तक रहे । 1956 में ही नागपुर से निकलने वाले पत्र 'नया खून' का संपादन । 1958 में 'नया खून' से मुक्त हो गए । अंतत: 1958 से दिग्विजय महाविद्यालय, राजनाँदगाँव में प्राध्यापक ।
अभिरुचि	:	अध्ययन-अध्यापन, लेखन-पत्रकारिता-राजनीति की नियमित-अनियमित व्यस्तता के बीच ।
कृतियाँ	:	'तार सप्तक' के एक कवि । चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल (कविता संग्रह) । काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी (कथा साहित्य) । कामायनी: एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, जिसका नया संस्करण अब कुछ परिवर्तित रूप में 'आखिर रचना क्यों ?' नाम से प्रकाशित, समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी (आलोचना) तथा भारत : इतिहास और संस्कृति (इतिहास) । मुक्तिबोध रचनावली (6 खंडों में) नेमिचंद्र जैन के संपादन में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित ।

गजानन माधव मुक्तिबोध बीसवीं शती के उत्तरार्ध के हिंदी के प्रमुख कवि, चिंतक, आलोचक और कथाकार हैं । उनका जन्म मध्य प्रदेश में हुआ था किंतु वे मराठी थे । हिंदी साहित्य में उनका उदय प्रयोगवाद के एक कवि के रूप में हुआ था । अज्ञेय के द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के एक कवि के रूप में वे सामने आए थे, किंतु शीघ्र ही अपने कठिन जीवन तथा रचना संघर्ष के कारण उन्होंने अपना पथ अलग और स्वतंत्र कर लिया । वे अपने रचनात्मक जीवन में युग की दो प्रधान वैश्विक विचारधाराओं अस्तित्ववाद एवं मार्क्सवाद के संसर्ग में आए और विकट वैचारिक एवं रचनात्मक संघर्षों की प्रक्रिया से गुजरते हुए एक सच्चे मार्क्सवादी बनकर निखरे । यह सच है कि कोई भी जागरूक, सत्यान्वेषी एवं जीवंत लेखक अपने समय की प्रमुख विचारधाराओं और भावधाराओं से विलग या तटस्थ नहीं रह पाता और मुक्तिबोध भी इसके अपवाद नहीं थे; किंतु वे अपनी प्रकृति और संवेदना से ही अथक सत्यान्वेषी, ज्ञान पिपासु

तथा साहसी खोजी थे । उनकी प्रकृति और संवेदना ही उन्हें उक्त विचारधाराओं के निकट ले गई थी । उनमें बौद्धिक और नैतिक पराक्रम कूट-कूटकर भरा हुआ था । स्वभावत: इन विचार दर्शनों के आगे उन्होंने तुरंत घुटने नहीं टेक दिए, अपनी गर्दन नहीं डाल दी; उनसे अपने प्रश्नों और आपत्तियों के साथ अनवरत संघर्ष किया और इस संघर्ष के बाद मार्क्सवाद को अपनी आस्था के रूप में उपार्जित किया । यही कारण है कि उनके साहित्य में कोई विचारधारा या दर्शन निरा अनुवादित नहीं दिखता, वह कवि के अपने विचारदर्शन–जिसका उसने ज्ञान, अनुभव और संवेदन के द्वारा अपने ढंग से विकास किया हो–की तरह प्रतीत होता है ।

मुक्तिबोध के जीवन और साहित्य में कोई फाँक नहीं दिखाई पड़ती । उनका जीवन और साहित्य दोनों अक्स-बर-अक्स और एक दिखाई पड़ते हैं । स्वभावत: जीवन मूल्य और रचना मूल्य भी एक हैं । मुक्तिबोध ने अपने जीवन से ही रचना की कीमत चुकाई । इस लिहाज से उनकी तुलना के लिए हिंदी में एक ही कवि हैं–निराला । मुक्तिबोध निराला की ही तरह अपनी पीढ़ी के महान क्रांतिकारी कवि हैं । उन्होंने कविताएँ लिखीं, कहानियाँ लिखीं, डायरी, आलोचना और एक उपन्यास भी लिखा, किंतु ये सभी साहित्य रूप और विधाएँ अपने परंपरागत ढाँचे का अतिक्रमण करती हैं । अतिक्रमण मुक्तिबोध के विलक्षण अनुभव और कथ्य के कारण हुआ है । उनका अध्ययन, पर्यवेक्षण, अनुभव, संवेदन और यथार्थ बोध असाधारण और अद्वितीय है । वे यथार्थ की सुपरिचित चालू सतह को अपनी प्रखर रचनात्मक अंतर्दृष्टि से भेदकर एक ऐसी समग्रता में पकड़ते हैं कि पाठक हतप्रभ रह जाता है । यही कारण है कि उनकी दृष्टि तथ्यों के वर्तमान तक ही सीमित न रहकर उनके अदृष्ट अतीत और अलक्ष्य भविष्य तक भी पहुँचती है ।

यहाँ उनकी एक अपेक्षाकृत आरंभिक दौर की ऐसी कविता दी जा रही है जो कथ्य और संप्रेषण की दृष्टि से कम जटिल और सुगम है । उन्होंने प्राय: लंबी कविताएँ ही लिखी हैं । यह कविता तुलनात्मक रूप से कम लंबी है । इस कविता में कवि की दृष्टि और संवेदना वैश्विक और सार्वभौम दिखाई पड़ती है । कवि पीड़ित और संघर्षशील जनता का, जो अपने मानवोचित अधिकारों के लिए कर्मरत है, चित्र प्रस्तुत करता है । यह जनता दुनिया के तमाम देशों में संघर्षरत है और अपने कर्म और श्रम से न्याय, शांति, बंधुत्व की दिशा में प्रयासरत है । कवि इस जनता में एक अंतर्वर्ती एकता देखता है और इस एकता को कविता का कथ्य बनाकर संघर्षकारी संकल्प में प्रेरणा और उत्साह का संचार करता है ।

◆ ◆ ◆

"जमाने भर का कोई इस कदर अपना न हो जाए,
कि अपनी जिंदगी खुद आपको बेगाना हो जाए !
चमन खिलता था, तू खिलता था; और वो खिलना कैसा था–
कि जैसे हर कली से दर्द का याराना हो जाए
इधर मैं हूँ; उधर मैं हूँ; अजल तू बीच में क्या है ?
फकत एक नाम है, यह नाम भी धोखा न हो जाए ।"

–शमशेर
(मुक्तिबोध के लिए)

जन-जन का चेहरा एक

चाहे जिस देश प्रांत पुर का हो
जन-जन का चेहरा एक !

एशिया की, यूरोप की, अमरीका की
गलियों की धूप एक ।
कष्ट-दुख संताप की,
चेहरों पर पड़ी हुई झुर्रियों का रूप एक !
जोश में यों ताकत से बँधी हुई
मुट्ठियों का एक लक्ष्य !
पृथ्वी के गोल चारों ओर के धरातल पर
है जनता का दल एक, एक पक्ष ।
जलता हुआ लाल कि भयानक सितारा एक,
उद्दीपित उसका विकराल सा इशारा एक ।
गंगा में, इरावती में, मिनाम में
अपार अकुलाती हुई,
नील नदी, आमेजन, मिसौरी में वेदना से गाती हुई,
बहती-बहाती हुई जिंदगी की धारा एक;
प्यार का इशारा एक, क्रोध का दुधारा एक ।
पृथ्वी का प्रसार
अपनी सेनाओं से किए हुए गिरफ्तार,
गहरी काली छायाएँ पसारकर,
खड़े हुए शत्रु का काले से पहाड़ पर
काला-काला दुर्ग एक,
जन शोषक शत्रु एक ।
आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकार
चीरता सा मित्र का स्वर्ग एक;

जन-जन का मित्र एक ।
विराट् प्रकाश एक, क्रांति की ज्वाला एक,
धड़कते वक्षों में है सत्य का उजाला एक,
लाख-लाख पैरों की मोच में है वेदना का तार एक,
हिये में हिम्मत का सितारा एक ।
चाहे जिस देश, प्रांत, पुर का हो
जन-जन का चेहरा एक ।

एशिया के, यूरोप के, अमरीका के
भिन्न-भिन्न वास स्थान;
भौगोलिक, ऐतिहासिक बंधनों के बावजूद,
सभी ओर हिंदुस्तान, सभी ओर हिंदुस्तान ।
सभी ओर बहनें हैं, सभी ओर भाई हैं ।
सभी ओर कन्हैया ने गायें चराई हैं
जिंदगी की मस्ती की अकुलाती भोर एक;
बंसी की धुन सभी ओर एक ।
दानव दुरात्मा एक,
मानव की आत्मा एक ।
शोषक और खूनी और चोर एक ।
जन-जन के शीर्ष पर,
शोषण का खड्ग अति घोर एक ।
दुनिया के हिस्सों में चारों ओर
जन-जन का युद्ध एक,
मस्तक की महिमा
व अंतर की ऊष्मा
से उठती है ज्वाला अति क्रुद्ध एक ।
संग्राम का घोष एक,
जीवन संतोष एक ।
क्रांति का, निर्माण का, विजय का सेहरा एक,
चाहे जिस देश, प्रांत, पुर का हो
जन-जन का चेहरा एक !

अभ्यास

कविता के साथ

1. 'जन-जन का चेहरा एक' से कवि का क्या तात्पर्य है ?
2. बँधी हुई मुट्ठियों का क्या लक्ष्य है ?
3. कवि ने सितारे को भयानक क्यों कहा है ? सितारे का इशारा किस ओर है ?
4. नदियों की वेदना का क्या कारण है ?
5. अर्थ स्पष्ट करें –

   (क) आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकार
   चीरता सा मित्र का स्वर्ग एक;
   जन-जन का मित्र एक

   (ख) एशिया के, यूरोप के, अमरीका के
   भिन्न-भिन्न वास स्थान;
   भौगोलिक, ऐतिहासिक बंधनों के बावजूद,
   सभी ओर हिंदुस्तान, सभी ओर हिंदुस्तान ।
6. 'दानव दुरात्मा' से क्या अभिप्राय है ?
7. ज्वाला कहाँ से उठती है ? कवि ने इसे 'अतिक्रुद्ध' क्यों कहा है ?
8. समूची दुनिया में जन-जन का युद्ध क्यों चल रहा है ?
9. कविता का केंद्रीय विषय क्या है ?
10. प्यार का इशारा और क्रोध का दुधारा से क्या तात्पर्य है ?
11. पृथ्वी के प्रसार को किन लोगों ने अपनी सेनाओं से गिरफ्तार कर रखा है ?
12. कविता की पंक्ति-पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए भावार्थ लिखिए ।

कविता के आस-पास

1. मुक्तिबोध आधुनिक हिंदी कविता के सर्वप्रमुख कवि हैं, इनकी प्रमुख कविताओं को उपलब्ध करें एवं कक्षा में उनका पाठ करें ।
2. मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं रचना-कर्म के बारे में शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें । अपनी पसंद से उनकी किसी कविता या कविता के अंश को कार्ड-बोर्ड पर लिखें एवं विद्यालय के बोर्ड पर प्रदर्शित करें ।
3. मुक्तिबोध के समकालीन कवियों की एक सूची बनाएँ ।
4. कविता में स्थानीय और वैश्विक शोषण का अंकन है, पर इसके समानांतर समर्थ संघर्ष का भी उल्लेख है, आप शोषकों एवं संघर्ष के इन प्रतीकों की पहचान किस रूप में करेंगे ।

5. कविता में जिन नदियों के नाम आए हैं, उनको विश्व के नक्शे में इंगित करें तथा पाँच-पाँच पंक्तियों में उनका परिचय लिखें ।

भाषा की बात

1. प्रस्तुत कविता के संदर्भ में मुक्तिबोध की काव्यभाषा की विशेषताएँ बताइए ।
2. 'संताप' और 'संतोष' का संधि-विच्छेद करें ।
3. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों से विशेषण चुनें –

गहरी काली छायाएँ पसारकर
खड़े हुए शत्रु का काले से पहाड़ पर
काला-काला दुर्ग एक,
जन शोषक शत्रु एक ।

4. उत्पत्ति की दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों की प्रकृति बताएँ –
कष्ट, संताप, भयानक, विकराल, इशारा, प्रसार, गिरफ्तार, शोषक, आशामयी, अंधकार, कन्हैया, मस्ती, खड्ग, सेहत ।
5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
धूप, गली, दानव, हिये, ज्वाला

शब्द निधि

संताप : गहरा दुख
उद्दीपित : जागृत

रघुवीर सहाय

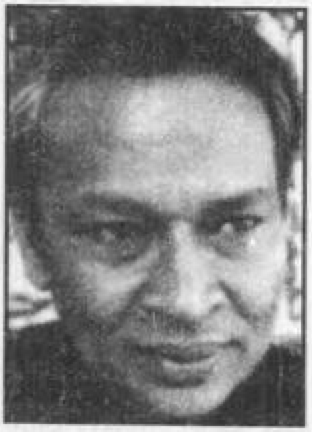

जन्म	:	9 दिसंबर 1929 ।
निधन	:	30 दिसंबर 1990 ।
जन्म-स्थान	:	लखनऊ, उत्तरप्रदेश ।
पिता	:	हरदेव सहाय (एक शिक्षक) ।
शिक्षा	:	एम० ए० (अंग्रेजी), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।
विशेष अभिरुचि	:	संगीत सुनना और फिल्में देखना ।
गतिविधि	:	अपनी और समकालीन कविता के वाचन के लिए 'कौमुदी' नामक कविता केंद्र की स्थापना और संचालन ।
सम्मान	:	'लोग भूल गए हैं' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार ।
वृत्ति	:	पत्रकारिता । 'नवजीवन' (लखनऊ) से आरंभ, फिर 'समाचार विभाग' आकाशवाणी, नई दिल्ली और फिर 'नवभारत टाइम्स' (नई दिल्ली) में विशेष संवाददाता । 1979 से 1982 तक 'दिनमान' समाचार-साप्ताहिक (नई दिल्ली) के प्रधान संपादक । भारतीय प्रेस परिषद् के सदस्य भी रहे ।
कृतियाँ	:	कविता : 'दूसरा सप्तक' में एक कवि के रूप में शामिल, सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ । कहानियाँ : सीढ़ियों पर धूप में, रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे हैं । निबंध : सीढ़ियों पर धूप में, दिल्ली मेरा परदेस, लिखने का कारण, ऊबे हुए सुखी, वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे, यथार्थ यथास्थिति नहीं । इसके अतिरिक्त अनुवाद कार्य भी । संपूर्ण रचनावली छह खंडों में 'राजकमल प्रकाशन' नई दिल्ली से प्रकाशित ।

स्वतंत्रता के बाद की भारत की बहुदलीय संसदीय राजनीति तथा एक पिछड़े सामंती सामाजिक ढाँचे में लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रतिष्ठा और विकास के सामाजिक राजनीतिक परिवेश में रघुवीर सहाय का रचनाकर्म और पत्रकारिता अपना रूपाकार ग्रहण करते हैं । रघुवीर सहाय बीसवीं शती के उत्तरार्ध के एक प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण कवि तथा पत्रकार हैं जिनके रचनाकर्म और पत्रकारिता का आगे की पीढ़ियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा । उन्होंने कहानियाँ भी लिखी हैं और वे अनेक कारणों से बहुमूल्य मानी जाती हैं । इसके अतिरिक्त रघुवीर सहाय ने विश्व साहित्य से अनेक कृतियों का, विशेष रूप से नाट्य, कथा आदि विधाओं की कृतियों का हिंदी में अनुवाद भी किया है जो उनके रचनाकर्म का ही एक अनिवार्य अंग है ।

रघुवीर सहाय छठे दशक के प्रारंभ में ही अज्ञेय द्वारा संपादित प्रयोगवादी संकलन 'दूसरा सप्तक' में एक कवि के रूप में सामने आए थे । अज्ञेय के सप्तकों और प्रयोगवाद की सबसे बड़ी भूमिका यह है कि छायावाद आदि पिछले काव्य आंदोलनों के बचे-खुचे प्रभावों और संस्कारों से नए प्रयोगों द्वारा पूरी तरह मुक्त होकर कविता की अग्रगति और विकास के लिए नई रचनाभूमि, नई भाषा, मुहावरा और रचनातंत्र की उद्भावना की शुरुआत हुई । सप्तकों और प्रयोगवाद के द्वारा वास्तविक अर्थों में समवेत रूप से नई कविता की पीठिका रची जा सकी तथा नए साहित्य चिंतन और

रचना-उपक्रम की प्रस्तावना की जा सकी । 'दूसरा सप्तक' के सात कवियों में रघुवीर सहाय शामिल थे । उनकी कविता संवेदना, सरोकार, विषयवस्तु, अनुभव, भाषा, शिल्प आदि अनेक तलों पर अपने संकल्प और व्यवहार में नई थी । उनकी विशिष्ट मनोरचना और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति कहानियों और उनकी पत्रकारिता में भी हुई; एक नया क्षितिज खुल पड़ा । निश्चय ही इस बड़ी युगांतरकारी घटना में अनेक कवियों-रचनाकारों की भूमिका थी । यह एक सामूहिक प्रयत्न था । पर इस सामूहिक प्रयत्न में रघुवीर सहाय बिना अगल-बगल झाँके अपनी समूची क्षमता और ईमानदार संलग्नता के साथ जुटे रहे । यह सिलसिला आगे तक चलता रहा और लगभग उनके रचना-दर्शन का अंग बन गया ।

रघुवीर सहाय की कविता ऊपर कथित अपने परिवेश से उलझकर और उसके प्रति अनुभूत सच्चाई की साहसपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए ही अपना औचित्य और सार्थकता हासिल करती है । कई बार यह प्रतिक्रिया निर्मम, तीखी और दाहक भी हो उठती है पर ऐसा हर्गिज नहीं होता कि इस निर्ममता और दाहकता के लिए कवि अपनी पीठ ठोके, इसमें रस या सुख पाए, इसे अपनी वीरमुद्रा बना ले और दूसरे शब्दों में यह उसकी कविता की आभूषण-संपदा बन जाए । रघुवीर सहाय व्यंग्य-कटाक्ष, घृणा और क्रोध का बहुधा उपयोग करते हैं, बड़े सार्थक उपयोग; किंतु उद्देश्य में निहितार्थ परपीड़न का सुख नहीं होता, सच्ची रचनात्मकता या कहें, अर्थपूर्ण नई सामाजिकता होती है । जातिवादी ऊँच-नीच, अमीर-गरीब आदि विभाजनों पर टिकी हुई समाज संरचना; स्वार्थ-दोहन, ठगी और पाखंड पर टिकी हुई राजनीति और संस्कृति को लेकर रघुवीर सहाय सतत सजग और सचेत रहे हैं । उन्हें सौंदर्य से ज्यादा हमेशा ही सत्य कविकर्म का ध्येय लगता रहा है; बल्कि यह कहना शायद अधिक उपयुक्त हो कि सच के साहसपूर्ण उद्घाटन में ही उनके निकट सौंदर्य के लिए सूरत निकल पाती रही है । ऐतिहासिक परिस्थितियों के दबाव में बदलते जाने की लाचारी में लगातार काइयाँ और धूर्त्त बनते जाते समाज के समानांतर रघुवीर सहाय को अपनी कविता की जमीन, पैंतरे और चरित्र बार-बार बदलते रहने पड़े—और यही कवि की रचनायात्रा रही; कभी थकने न देनेवाली, हमेशा चौकस ।

यहाँ प्रस्तुत कविता उनके संग्रह 'आत्महत्या के विरुद्ध' से ली गई है और एक व्यंग्य कविता है । ऐसी व्यंग्य कविता जिसमें हास्य नहीं, आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण तिक्त कटाक्ष है । राष्ट्रीय गान में निहित 'अधिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक कटाक्ष है । आजादी हासिल होने के इतने वर्षों के बाद भी आम आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया । कविता में 'हरचरना' इसी आम आदमी का प्रतिनिधि है । वह एक स्कूल जानेवाला बदहाल गरीब लड़का है जो अपनी आर्थिक-सामाजिक हालत के विपरीत औपचारिकतावश सरकारी स्कूल में पढ़ता है । राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में वह 'फटा सुथन्ना' पहने वही राष्ट्रगान दुहराता है जिसमें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी न जाने किस 'अधिनायक' का गुणगान किया गया है । सत्ताधारी वर्ग बदले हुए जनतांत्रिक संविधान से चलती इस व्यवस्था में भी राजसी ठाठ-बाट वाले भड़कीले रोब-दाब के साथ इस जलसे में शिरकत कर अपना गुणगान अधिनायक के रूप में करवाए जा रहा है । कविता में निहितार्थ ध्वनि यह है मानो इस सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन्न लालसा हो सचमुच अधिनायक अर्थात तानाशाह बनने की ।

◆ ◆ ◆

"समाज में रहते हुए मैं दाढ़ी बढ़ाकर नहीं घूमता, कपड़े इस तरह के नहीं पहनता कि लोग कह उठें, वह देखो, कवि आया; और बात इस तरह से नहीं करता कि लोग परे हटकर अदब से बैठें । पर बात इस तरह जरूर करता हूँ कि सिर्फ वे ही लोग दुबारा मिलना चाहें जो निर्भय हैं और बिना अकारण आदर दिखाए या अकारण आदर माँगे दुबारा मिल सकते हैं ।"

— रघुवीर सहाय : अपनी तस्वीर

अधिनायक

राष्ट्रगीत में भला कौन वह
भारत-भाग्य-विधाता है
फटा सुथना पहने जिसका
गुन हरचरना गाता है ।

मखमल टमटम बल्लम तुरही
पगड़ी छत्र चँवर के साथ
तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर
जय-जय कौन कराता है ।

पूरब-पश्चिम से आते हैं
नंगे-बूचे नरकंकाल
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमगे कौन लगाता है ।

कौन-कौन है वह जन-गण-मन-
अधिनायक वह महाबली
डरा हुआ मन बेमन जिसका
बाजा रोज बजाता है ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. हरचरना कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?
2. हरचरना 'हरिचरण' का तद्‌भव रूप है, कवि ने कविता में 'हरचरना' को रखा है, हरिचरण को नहीं; क्यों ?
3. अधिनायक कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?
4. 'जय-जय कराना' का क्या अर्थ है ?
5. 'डरा हुआ मन बेमन जिसका/बाजा रोज बजाता है'– यहाँ 'बेमन' का क्या अर्थ है ?
6. हरचरना अधिनायक के गुण क्यों गाता है ? उसके डर के क्या कारण हैं ?
7. 'बाजा बजाना' का क्या अर्थ है ?
8. 'कौन-कौन है वह जन-गण-मन-अधिनायक वह महाबली' – कवि यहाँ किसकी पहचान कराना चाहता है ?
9. 'कौन-कौन' में पुनरुक्ति है, कवि ने यह प्रयोग किसलिए किया है ?
10. भारत के राष्ट्रगीत 'जन-गण-मन-अधिनायक जय हे' से इस कविता का क्या संबंध है ? वर्णन करें ।
11. कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।
12. व्याख्या करें –

    पूरब पश्चिम से आते हैं
    नंगे बूचे नर-कंकाल,
    सिंहासन पर बैठा, उनके
    तमगे कौन लगाता है

कविता के आस-पास

1. रघुवीर सहाय की ऐसी कविताएँ जिनमें देश की राजनीतिक-सामाजिक स्थितियों पर व्यंग्य किया गया है, उनका संकलन करें और कक्षा में पाठ करें ।
2. प्रसिद्ध कवि मुक्तिबोध की एक अत्यंत ही चर्चित कविता है–'भूल गलती' । इस कविता की आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

    भूल गलती
    आज बैठी है जिरहबख़्तर पहनकर
    तख़्त पर दिल के;
    चमकते हैं खड़े हथियार उसके दूर तक
    आँखें चिलकती हैं नुकीले तेज पत्थर सी

खड़ी हैं सिर झुकाए
सब कतारें
बेजुबाँ बेबस सलाम में,
अनगिनत खंभों व मेहराबों-थमे
दरबारे-आम में ।

इन पंक्तियों से 'अधिनायक' की तुलना करें, आप इनमें क्या साम्य पाते हैं, बताइए ।

भाषा की बात

1. अधिनायक में 'अधि' उपसर्ग है, 'अधि' उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
2. निम्नलिखित पदों का विग्रह करें और समास बताएँ –
   राष्ट्रगीत, बेमन, पूरब-पश्चिम, महाबली, नरकंकाल ।
3. कवि ने 'गुन' और 'पच्छिम' जैसे प्रयोग क्यों किए हैं, जबकि इनका शुद्ध रूप क्रमशः 'गुण' और 'पश्चिम' हैं ।
4. तमगे, रोज, बेमन के समानार्थी शब्द क्या होंगे ?
5. 'कौन-कौन है वह जन-गण-मन'–अर्थ की दृष्टि से यह किस प्रकार का वाक्य है ?
6. कवि की काव्यभाषा पर अपनी टिप्पणी लिखें ।

शब्द निधि

विधाता	:	निर्माणकर्ता
सुथन्ना	:	पुराने ढंग की ढीली-ढाली हाफ पैंट
बल्लम	:	भाले और बर्छी की तरह एक शस्त्र
तुरही	:	(तूर्य) युद्ध का घोष करने वाला एक वाद्य
छत्र-चँवर	:	छतरी और चँवर, राजसी चिह्न
तमगे	:	मेडल

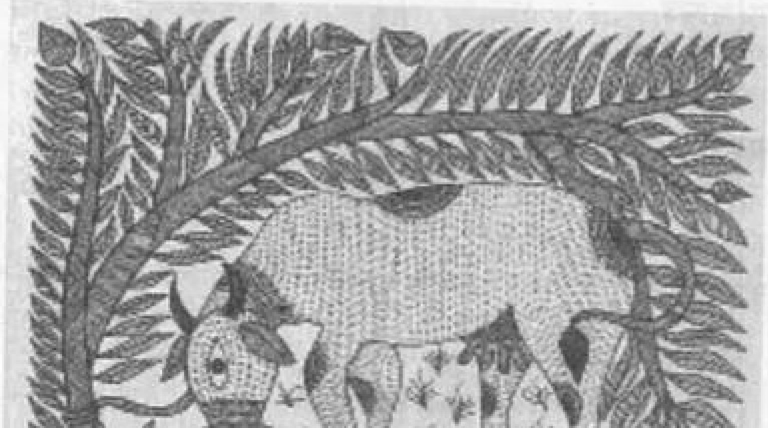

विनोद कुमार शुक्ल

जन्म	:	1 जनवरी 1937 ।
जन्म-स्थान	:	राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़ ।
निवास	:	रायपुर, छत्तीसगढ़ ।
वृत्ति	:	इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय में एसोशिएट प्रोफेसर, निराला सृजनपीठ में जून 1994 से जून 1996 तक अतिथि साहित्यकार रहे ।
सम्मान	:	रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार (1992), दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान (1997), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1999) ।
कृतियाँ	:	पहला कविता संग्रह 'लगभग जयहिंद' पहचान सीरीज के अंतर्गत 1971 में प्रकाशित । वह आदमी नया गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह (1981), सबकुछ होना बचा रहेगा (1992), अतिरिक्त नहीं (2001) : सभी कविता संकलन । नौकर की कमीज, खिलेगा तो देखेंगे, दीवार में एक खिड़की रहती थी : सभी उपन्यास । पेड़ पर कमरा, महाविद्यालय : कहानी संग्रह ।
विशेष	:	उपन्यासों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद । इतालवी भाषा में इनकी कविताओं एवं एक कहानी संग्रह 'पेड़ पर कमरा' का अनुवाद हो चुका है । 'नौकर की कमीज' उपन्यास पर मणि कौल द्वारा फिल्म का निर्माण ।

बीसवीं शती के सातवें-आठवें दशक में विनोद कुमार शुक्ल एक कवि के रूप में सामने आए थे । कुछ ही समय बाद उसी दौर में उनकी दो-एक कहानियाँ भी सामने आई थीं । धारा और प्रवाह से बिलकुल अलग, देखने में सरल किंतु बनावट में जटिल अपने न्यारेपन के कारण उन्होंने सुधीजनों का ध्यान आकृष्ट किया था । अपनी रचनाओं में वे आपादमस्तक मौलिक, न्यारे और अद्वितीय थे; किंतु यह विशेषता निरायास और कहीं से भी ओढ़ी या थोपी गई नहीं थी । यह खूबी भाषा या तकनीक पर निर्भर नहीं थी । इसकी जड़ें संवेदना और अनुभूति में थीं और यह भीतर से पैदा हुई खासियत थी । तब से लेकर आज तक वह अद्वितीय मौलिकता अधिक स्फुट, विपुल और बहुमुखी होकर उनकी कविता, उपन्यास और कहानियों में उजागर होती आई है । वह इतनी संश्लिष्ट, जैविक, आवयविक और सरल है कि उसकी नकल नहीं की जा सकती । कविता और कथा दोनों ही विधाओं में जिन्होंने ऐसा करना चाहा, वे मुँह के बल बालू पर गिरे ।

विनोद कुमार शुक्ल कवि और कथाकार हैं । दोनों ही विधाओं में उनका अवदान अप्रतिम है । पिछले दशकों में उनके तीन उपन्यास प्रकाशित हुए जिन्होंने हिंदी उपन्यास की दशा-दिशा पर निर्णायक प्रभाव डाला । इन उपन्यासों ने हिंदी उपन्यास की जड़ता और सुस्ती तोड़ी तथा कथाभाषा और तकनीक को एक रचनात्मक स्फूर्ति दी । उनके कथा साहित्य ने बिना किसी तरह की वीरमुद्रा के सामान्य निम्न मध्यवर्ग के कुछ ऐसे पात्र दिए जिनमें अद्भुत जीवट,

जीवनानुराग, संबंधबोध और सौंदर्य चेतना है । किंतु यह सदा अस्वाभाविक, यत्नसाध्य और 'हिरोइक्स' से परे इतने स्वाभाविक, निरायास और सामान्य रूप में कि जैसे वह परिवेश और वातावरण का अविच्छिन्न अंग हो । विनोद कुमार शुक्ल का आख्यान और बयान--कविता और कथा दोनों में; मामूली बातचीत की मद्धिम लय और लहजे में, शुरू ही नहीं खत्म भी होता है । रोजमर्रे के, सामान्य व्यवहृत, एक हद तक घिसे-पिटे शब्दों में उनका समूचा साहित्य लिखा गया है । साक्षर या सामान्य शिक्षित किसी भी व्यक्ति को उनका साहित्य पढ़ते हुए कभी भी शब्दकोश देखने की जरूरत न पड़े, ऐसी भाषा है उनकी । पर उन्हीं शब्दों में एक अपूर्व चमक और ताजगी चली आई है और वे अपनी संपूर्ण गरिमा में प्रतिष्ठित दिखाई पड़ते हैं । विनोद कुमार शुक्ल खूब पढ़े जाते हुए किंतु सबसे कम विवेचित लेखक हैं । निश्चय ही, यह भी उनकी अद्वितीयता और मौलिकता का एक और सबूत है । प्रकृति, पर्यावरण, समाज और समय से उनकी संपृक्ति किसी विचारधारा, दर्शन या प्रतिज्ञा की मोहताज नहीं । उनकी संपृक्ति पुराने महान कवियों-लेखकों सरीखी है । आज के समय में वे भारतीय साहित्य का अंग बन चुके हैं ।

यहाँ उनके कविता संकलन 'वह आदमी नया गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह' से एक कविता 'प्यारे नन्हें बेटे को' प्रस्तुत है । कविता ऊपर कही गई बातों का साक्ष्य पेश करती है । कविता का नायक जो भिलाई, छत्तीसगढ़ का रहनेवाला है, अपने नन्हें बेटे को कंधे पर उठाए अपनी नन्हीं बिटिया से घर के भीतर जैसे कौतुकपूर्ण बातचीत करते हुए पूछता है कि 'बतलाओ आसपास कहाँ-कहाँ लोहा है' । लोहा कदम-कदम पर और एक गृहस्थी में सर्वव्याप्त है । कविता के अंत में यह लोहा अनायास एक दुर्भेद्य प्रतीकार्थता ग्रहण कर लेता है । ठोस होकर भी वह हमारी जिंदगी और संबंधों में घुला-मिला हुआ और प्रवाहित है । वह हमारा आधार है ।

◆ ◆ ◆

"दुनिया जगत
जगत कुएँ का ।
जिस पर जाने कैसे
चढ़ा एक नन्हा बच्चा ।
आवाज नहीं दी मैंने उसको
चौंककर कुएँ के अंदर गिर जाता तो !!

चुपचाप धीरे धीरे चला
सम्हलकर उठाया मैंने गोद में उसको ।
बस इतना मैं चुप रहा
इतना धीरे चला
बहुत चुप बहुत धीरे चला ।"

– विनोद कुमार शुक्ल

प्यारे नन्हें बेटे को

प्यारे नन्हें बेटे को
कंधे पर बैठा
'मैं दादा से बड़ा हो गया'
सुनना यह ।

प्यारी बिटिया से पूछूँगा-
'बतलाओ आसपास
कहाँ-कहाँ लोहा है'
'चिमटा, करकुल, सिगड़ी
समसी, दरवाजे की साँकल, कब्जे
खीला दरवाजे में धँसा हुआ'
वह बोलेगी झटपट ।

रुककर वह फिर याद करेगी
'एक तार लोहे का लंबा
लकड़ी के दो खंबों पर
तना बँधा हुआ बाहर
सूख रही जिस पर
भय्या की गीली चड्डी !
फिर-एक सैफ्टी पिन, साइकिल पूरी ।

आसपास वह ध्यान करेगी
सोचेगी

दुबली पतली पर
हरकत में तेजी कि
कितनी जल्दी
जान जाए वह
आसपास कहाँ-कहाँ लोहा है ।

मै याद दिलाऊँगा
जैसे सिखलाऊँगा बिटिया को
'फावड़ा, कुदाली,
टँगिया, बसुला, खुरपी
पास खड़ी बैलगाड़ी के
चक्के का पट्टा,
बैलों के गले में
काँसे की घंटी के अंदर
लोहे की गोली ।'

पत्नी याद दिलाएगी
जैसे समझाएगी बिटिया को
'बाल्टी, सामने कुएँ में लगी लोहे की घिर्री,
छत्ते की काड़ी-डंडी और घमेला,
हँसिया, चाकू और
भिलाई बलाडिला
जगह जगह लोहे के टीले ।'

इसी तरह
घर भर मिलकर
धीरे धीरे सोच सोचकर
एक साथ ढूँढ़ेंगे
कहाँ-कहाँ लोहा है–
इस घटना से
उस घटना तक
कि हर वो आदमी
जो मेहनतकश
लोहा है

हर वो औरत
दबी सतायी
बोझ उठाने वाली, लोहा !
जल्दी जल्दी मेरे कंधे से
ऊँचा हो लड़का
लड़की का हो दूल्हा प्यारा
उस घटना तक
कि हर वो आदमी
जो मेहनतकश
लोहा है
हर वो औरत
दबी सतायी
बोझ उठाने वाली, लोहा ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

कविता के साथ

1. 'बिटिया' से क्या सवाल किया गया है ?
2. 'बिटिया' कहाँ-कहाँ लोहा पहचान पाती है ?
3. कवि लोहे की पहचान किस रूप में कराते हैं ? यही पहचान उनकी पत्नी किस रूप में कराती हैं ?
4. लोहा क्या है ? इसकी खोज क्यों की जा रही है ?
5. 'इस घटना से उस घटना तक' –यहाँ किन घटनाओं की चर्चा है ?
6. अर्थ स्पष्ट करें –

   कि हर वो आदमी
   जो मेहनतकश
   लोहा है
   हर वो औरत
   दबी सताई
   बोझ उठाने वाली, लोहा ।
7. कविता में लोहे की पहचान अपने आसपास में की गई है । बिटिया, कवि और उनकी पत्नी जिन रूपों में इसकी पहचान करते हैं, ये आपके मन में क्या प्रभाव उत्पन्न करते हैं ? बताइए ।

8. मेहनतकश आदमी और दबी-सतायी, बोझ उठाने वाली औरत में कवि द्वारा लोहे की खोज का क्या आशय है ?
9. यह कविता एक आत्मीय संसार की सृष्टि करती है पर वह संसार बाह्य निरपेक्ष नहीं है । इसमें दृष्टि और संवेदना, जिजीविषा और आत्मविश्वास सम्मिलित हैं । इस कथन को पुष्टि कीजिए ।
10. बिटिया को पिता 'सिखलाते' हैं तो माँ 'समझाती' है । ऐसा क्यों ?

कविता के आस-पास

1. विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों को अपने पुस्तकालय से प्राप्त करें और पढ़ कर मित्रों से उन पर चर्चा करें।
2. विनोद कुमार शुक्ल के विभिन्न काव्य संकलनों से अपनी पसंद की पाँच कविताएँ एकत्र करें एवं वर्ग में उनका पाठ करें ।
3. विनोद कुमार शुक्ल समकालीन हिंदी साहित्य के एक प्रमुख स्तंभ हैं, इनके लेखन की विशिष्टताओं पर अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
4. भिलाई बलाडिला का उल्लेख कविता में क्यों किया गया है ?
5. विनोद कुमार शुक्ल की एक अन्य कविता **'यह चेतावनी है'** यहाँ दी जा रही है, अपनी कक्षा में इसका पाठ करें एवं इसके कथ्य पर विचार करें–

यह चेतावनी है
कि एक छोटा बच्चा है ।
यह चेतावनी है
कि चार फूल खिले हैं ।
यह चेतावनी है
कि खुशी है,
और घड़े में भरा हुआ पानी
पीने के लायक है
हवा में साँस ली जा सकती है
यह चेतावनी है
कि दुनिया है
बची दुनिया में
मैं बचा हुआ
यह चेतावनी है
मैं बचा हूँ
किसी होने वाले युद्ध से
जीवित बच निकलकर
मैं अपनी
अहमियत से मरना चाहता हूँ
कि मरने के
आखिरी क्षणों तक
अनंतकाल जीने की कामना करूँ
कि चार फूल हैं
और दुनिया है ।

भाषा की बात

1. इस कविता की भाषा पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए ।
2. व्युत्पत्ति की दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों की प्रकृति बताएँ–
   औरत, लड़की, बेटा, बिटिया, आदमी, लोहा, कंधा, छत्ते, दूल्हा, बाल्टी, कुआँ, पिन, साइकिल, दादा
3. नीचे दिए शब्दों से वाक्य बनाएँ–
   कंधा, दादा, बिटिया, लोहा, गला, घंटी, बैलगाड़ी, घटना, बोझ ।

शब्द निधि

करकुल	:	कलछुल
सिगड़ी	:	जंजीर, लोहे की कड़ाही
समसी	:	संड़सी
खीला	:	मोटी काँटी, लोहे का कंटा
मेहनतकश	:	श्रमिक, अपने श्रम के सहारे जीविका कमाने वाला

ज्ञानेंद्रपति

जन्म : 1 जनवरी 1950 ।

जन्म-स्थान : पथरगामा, गोड्डा, झारखंड ।

माता-पिता : सरला देवी एवं देवेंद्र प्रसाद चौबे ।

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ; बी० ए० और एम० ए० अंग्रेजी विषय में पटना विश्वविद्यालय से । फिर हिंदी में भी एम० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से ।

वृत्ति : बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित होकर कारा अधीक्षक के रूप में कार्य करते हुए कैदियों के लिए अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए । अनंतर नौकरी छोड़कर फ़कत कविता लेखन ।

निवास : वाराणसी, उत्तर प्रदेश ।

सम्मान : पहल सम्मान (2006), 'संशयात्मा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (2006) ।

कृतियाँ : आँख हाथ बनते हुए (1970), शब्द लिखने के लिए ही यह कागज बना है (1980), गंगातट (2000), संशयात्मा (2004) भिनसार (2006) कवि ने कहा (2007) – कविता संग्रह । एकचक्रानगरी (काव्य नाटक) । पढ़ते-गढ़ते (2005) – कथेतर गद्य ।

एक संभावनाशाली युवा कवि के रूप में ज्ञानेंद्रपति बीसवीं शती के आठवें दशक में उदित हुए । अपने शब्दचयन, भाषा, संवेदना की ताजगी और रचना विन्यास में आत्मसजग संधान जैसी विशेषताओं के कारण उन्होंने हिंदी कविता के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया । 1980 में आए अपने दूसरे कविता संग्रह से उन्होंने विचारशील पाठकों और स्वतंत्रमति विवेकवान आलोचकों को अपनी प्रतिभा, काव्य ऊर्जा और स्वाधीन सामर्थ्य से आश्वस्त किया । जीवन और रचना में उनकी एक जैसी स्वनिर्भर एवं आत्मविश्वासपूर्ण गति-मति और अंदाज अक्सर चालू हलकों में उन्हें संदेह का पात्र बनाते रहे । प्रचलित फैशन और रीतियों से बेपरवाह होने के कारण प्राय: स्वार्थों पर टिकी गुटबंदी और ओछी राजनीति से चालित लेखन-प्रकाशन के संसार का चालू प्रवाह उनसे कतराकर निकलता रहा । किंतु ज्ञानेंद्रपति एक ऐसे अध्ययनशील और मनीषाधर्मी रचनाकार हैं जो निजी संबंधों, सामाजिक रिश्तों और रचनाधर्म को अपने ही ढंग से रचते-गढ़ते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहे हैं । लेखक संगठनों, साहित्यिक राजनीति और लेन-देन के सतही व्यवहारों-बर्तावों की उन्होंने कभी चिंता नहीं की । अपनी गतिविधियों और रंग-ढंग से वे प्राय: एक व्यक्तिवादी रचनाकार के रूप में इंगित किए जाते रहे, किंतु उन्हीं के बीच, जो रचना की जगह रचनाकार को देख कर अपना निष्कर्ष रखते हैं; क्योंकि अपने बारे में वे स्वयं जानते हैं कि उनका रचनाकर्म निरा शब्द व्यापार है; खोखला और सारहीन, एक मिथ्याकर्म । ज्ञानेंद्रपति अपनी समझ, संवेदना और दृष्टिकोण में ही नहीं, जीवन-व्यवहार, संबंधों और रचना के भीतर-बाहर के सच में भी 'व्यक्तिवाद' के फर्क को समझते और जाहिर करते हुए कवि और कविता के सामाजिक सरोकारों में सजग अंतर्निष्ठा बनाए रखनेवाले रचनाकार हैं । उनका रचना संसार इसका ज्वलंत साक्ष्य है ।

इतिहास, परंपरा और स्मृतियों का ज्ञानेंद्र की कविता में एक अद्‌भुत रचाव-बसाव है; किंतु वह कवि को उस समयबोध और वर्तमान से विमुख या विच्युत नहीं करता; बल्कि उसे विस्तार देता और समृद्ध करता है । कवि के रचनाकर्म की ऊर्मियाँ और अनुगूँजें दूर तक फैलती हैं; उसका समयबोध अधिक प्रशस्त, गुंजान, गरिमामय और व्यक्तित्व संपन्न हो उठता है । ज्ञानेंद्र के यहाँ समयबोध और वर्तमान की आँच मंद नहीं पड़ती, उसके ताप और प्रकाश में ही स्मृतियाँ, इतिहास और परंपरा का रचाव-बसाव होता है । मूल से उखड़ने और पुन: उससे जा लगने की छटपटाहट की समस्या उनके यहाँ नहीं है, क्योंकि उनके साथ निर्णायक रूप में ऐसा कुछ घटित नहीं हुआ । बीत चुके, गँवाए और खोए जा चुके की पीड़ा और शोक उनकी कविता में है; पर 'नास्टेल्जिया' (आर्तगृहातुरता) बनकर नहीं; एक अनिवार्य दुख-विषाद की तरह जो यथार्थ की प्रतीति को, कवि के अनुभव को गहराता है और कविता के चेहरे को मानवीय विश्वसनीयता प्रदान करता है । ज्ञानेंद्रपति वस्तुओं, दृश्यों, प्रसंगों के निरीक्षण-पर्यवेक्षण का अपना अलग अंदाज आज भी बदस्तूर बनाए हुए हैं, शब्द-चयन और काव्य-भाषा के तल पर सावधान चयनधर्मिता और प्रयोगों का सिलसिला उनकी कविता में आज भी अटूट है, कदाचित वह जरूरत के मुताबिक बढ़ा भी है । 'गंगातट' नामक संग्रह के द्वारा अपने समकालीनों के बीच उन्होंने अद्‌भुत सर्जनात्मक स्थैर्य और धैर्य प्रमाणित कर दिखाया है । उनकी कविता के उत्स विपुल और बहुरूप हैं । पाठक की उत्सुकता उनमें बढ़ी है ।

उनके नवीनतम कविता संग्रह 'संशयात्मा' से ली गई प्रस्तुत कविता ऊपर कही गई बातों को उदाहृत और प्रमाणित करती है ।

◆ ◆ ◆

" पाँच चिड़ियों ने
खाली आकाश को
सूने घाट पर नहाने आई सखियों-सा
अपनी क्रीड़ाओं से भर दिया

फिर आए
राहगीर पक्षियों के
मंथर झुंड
काँपते आकाश को
सुतल करते । "

–ज्ञानेंद्रपति

गाँव का घर

गाँव के घर के
अंतःपुर की वह चौखट
टिकुली साटने के लिए सहजन के पेड़ से छुड़ाई गई गोंद का गेह वह
वह सीमा
जिसके भीतर आने से पहले खाँस कर आना पड़ता था बुजुर्गों को
खड़ाऊँ खटकानी पड़ती थी खबरदार की
और प्रायः तो उसके उधर ही रुकना पड़ता था
एक अदृश्य पर्दे के पार से पुकारना पड़ता था
किसी को, बगैर नाम लिए
जिसकी तर्जनी की नोक धारण किए रहती थी सारे काम, सहज,
शंख के चिह्न की तरह
गाँव के घर की
उस चौखट के बगल में
गेरू-लिपी भीत पर
दूध-डूबे अँगूठे के छापे
उठौना दूध लाने वाले बूढ़े ग्वाल दादा के-
हमारे बचपन के भाल पर दुग्ध-तिलक-
महीने के अंत में गिने जाते एक-एक कर

गाँव का वह घर
अपना गाँव खो चुका है
पंचायती राज में जैसे खो गए पंच परमेश्वर
बिजली-बत्ती आ गई कब की, बनी रहने से अधिक गई रहनेवाली
अबके बिटौआ के दहेज में टी. वी. भी
लालटेनें हैं अब भी, दिन-भर आलों में कैलेंडरों से ढँकी-

रात उजाले से अधिक अँधेरा उगलतीं
अँधेरे में छोड़ दिए जाने के भाव से भरतीं
जबकि चकाचौंध रोशनी में मदमस्त आर्केस्ट्रा बज रहा है कहीं, बहुत दूर,
पट भिड़काए
कि आवाज भी नहीं आती यहाँ तक, न आवाज की रोशनी,
न रोशनी की आवाज
होरी-चैती बिरहा-आल्हा गूँगे
लोकगीतों की जन्मभूमि में भटकता है एक शोकगीत अनगाया अनसुना
आकाश और अँधेरे को काटते
दस कोस दूर शहर से आने वाला सर्कस का प्रकाश-बुलौआ
तो कब का मर चुका है
कि जैसे गिर गया हो गजदंतों को गँवाकर कोई हाथी
रेते गए उन दाँतों की जरा-सी धवल धूल पर
छीज रहे जंगल में,
लीलने वाले मुँह खोले, शहर में बुलाते हैं ब्रस
अदालतों और अस्पतालों के फैले-फैले भी रुँधते-गँधाते अमित्र परिसर
कि जिन बुलौओं से
गाँव के घर की रीढ़ झुरझुराती है

◆ ◆ ◆

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि की स्मृति में 'घर का चौखट' इतना जीवित क्यों है ?
2. 'पंच परमेश्वर' के खो जाने को लेकर कवि चिंतित क्यों है ?
3. 'कि आवाज भी नहीं आती यहाँ तक, न *आवाज की रोशनी न रोशनी की आवाज' – यह आवाज क्यों नहीं आती ?
4. आवाज की रोशनी या रोशनी की आवाज का क्या अर्थ है ?
5. कविता में किस शोकगीत की चर्चा है ?
6. सर्कस का प्रकाश-बुलौआ किन कारणों से मरा होगा ?

. गाँव के घर की रीढ़ क्यों झुरझुराती है, इस झुरझुराहट के क्या कारण हैं ?

. मर्म स्पष्ट करें –

'कि जैसे गिर गया हो गजदंतों को गँवाकर कोई हाथी'

8. कविता में कवि की कई स्मृतियाँ दर्ज हैं । स्मृतियों का हमारे लिए क्या महत्त्व होता है, इस विषय पर अपने विचार विस्तार से लिखें ।

9. चौखट, भीत, सर्कस, घर, गाँव और साथ ही बचपन के लिए कवि की चिंता को आप कितना सही मानते हैं ? अपने विचार लिखें ।

10. जिन चीजों का विलोप हो चुका है और जिनके लिए शोक है, उनकी एक सूची बनाएँ ।

कविता के आस-पास

1. होरी-चैती, विरहा-आल्हा ये हमारे ग्राम्य लोकगीत हैं । इन ग्राम्यगीतों का क्या महत्त्व है ? क्या इन गीतों का संबंध हमारे वर्तमान से नहीं है ? इनके विषय में अपने बुजुर्गों और शिक्षकों से चर्चा करें ।
2. गाँव के प्रति हमारा आकर्षण उसके भूगोल, देशीपन और अकृत्रिमता के कारण होता है ? आपका गाँव कैसा है ? मित्रों से चर्चा करें और अपने विचार 'मेरा गाँव' शीर्षक निबंध में प्रस्तुत कीजिए ।
3. इस कविता की केंद्रीय चिंता और संवेदना पर विचार करते हुए आप गाँव के जीवन के अपने अनुभवों से उनकी तुलना करें तथा अपनी प्रतिक्रिया लिखें ।
4. ज्ञानेंद्रपति की एक कविता **'चंद्रबिंदु की चिंता'** यहाँ दी जा रही है –

मुझे चंद्रबिंदु की चिंता है
चंद्रबिंदु नहीं नभ का
भाषा का
लिपि का
देवनागरी लिपि का
एक मानव-समाज की ऊर्जा का एक अर्ध चित्र
नयनाभिराम
लिपि के नभ का चंद्रबिंदु
लिपि जो एक मानव-सभ्यता का आँगन है
मुझे चंद्रबिंदु की चिंता है
लिपि को सुदूर जन तक पसारनेवाले ये छापेखाने
रौंद जाएँगे क्या
देवनागरी लिपि की सर्वाधिक सुंदर सुघड़ कोमल आकृति
यंत्रवक्ष में
न रहेगी चंद्रबिंदु के लिए जगह
सूरज की पीठ पर छपने वाले अखबार
छपेंगे चंद्रबिंदु के बगैर
बड़ी होगी जो पीढ़ी बेटे-बेटियों की
अनुस्वार के उदित गोलाकार में चंद्रबिंदु की
अस्ताभा नहीं पहचानेगी

'गाँव का घर' और इस कविता में समान चिंता के कौन से तत्त्व हैं, उल्लेख करें ।

4. कविता से देशज शब्दों को चुन कर लिखें ।
5. धवल-धूल से क्या आशय है ?

भाषा की बात

1. 'गाँव के घर की रीढ़ झुरझुराती है' । 'झुरझुराती' के लिए आप कोई अन्य शब्द देना चाहेंगे, या यह सबसे सटीक क्रिया है, यदि हाँ तो क्यों ?
2. 'बिजली बत्ती आ गई कब की, बनी रहने से अधिक गई रहने वाली' – कवि के भाषिक कौशल का यह एक उपयुक्त उदाहरण है । बिजली नहीं रहती इसके लिए 'नहीं रहने वाली' प्रयोग होता तो उतनी व्यंजकता नहीं आती जितनी 'गई रहने वाली' से । इस दृष्टि से विचार करते हुए कविता से ऐसी पंक्तियों को चुनें ।
3. इन शब्दों के लिए कविता में प्रयुक्त विशेषणों से अलग विशेषण दें –
रोशनी, आर्केस्ट्रा, आवाज, जन्मभूमि, शोकगीत, आकाश, सर्कस, हाथी, धूल, भीत ।
4. 'गाँव का घर' की काव्यभाषा की विशेषताएँ लिखिए ।

शब्द निधि

अंतःपुर : घर का आंतरिक भाग जो ड्योढ़ी के बाद पड़ता है
भीत : दीवार
धवल : उजला
गेह : घर
दूध-डूबे अँगूठे के छापे : दूध में अँगूठा डुबाकर दीवार पर लगाए गए चिह्न
उठौना : रोज़ बाहर से नियमित दूध खरीदकर मँगाए जाने का क्रम

अशोक वाजपेयी

जन्म	:	16 जनवरी 1941 ।
जन्म-स्थान	:	दुर्ग, छत्तीसगढ़ ।
मूल निवास	:	सागर, मध्य प्रदेश ।
माता-पिता	:	निर्मला देवी एवं परमानंद वाजपेयी ।
शिक्षा	:	प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट हायर सेकेंड्री स्कूल, सागर; सागर विश्वविद्यालय से बी० ए० और सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से अंग्रेजी में एम० ए० ।
वृत्ति	:	भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, कई महत्त्वपूर्ण दायित्वों का निर्वाह, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति पद से सेवानिवृत्त हुए ।
संप्रति	:	दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन ।
सम्मान	:	साहित्य अकादमी पुरस्कार, दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान, फ्रेंच सरकार का ऑफिसर आव् द आर्डर आव् आर्ट्स एंड लैटर्स 2005, पोलिश सरकार का ऑफिसर आव् द आर्डर आव् क्रास 2004 सम्मान आदि ।
कृतियाँ	:	तीन दर्जन के लगभग मौलिक और संपादित कृतियाँ प्रकाशित । शहर अब भी संभावना है, एक पतंग अनंत में, अगर इतने से, तत्पुरुष, कहीं नहीं वहीं, बहुरि अकेला, थोड़ी सी जगह, घास में दुबका आकाश, आविन्यो, अभी कुछ और, समय के पास समय, इबारत से गिरी मात्राएँ, कुछ रफू कुछ थिगड़े, उम्मीद का दूसरा नाम, विवक्षा, दुख चिट्ठीरसा है (कविता संग्रह)। फिलहाल, कुछ पूर्वग्रह, समय से बाहर, सीढ़ियाँ शुरू हो गई हैं, कविता का गल्प, कवि कह गया है (आलोचना)। तीसरा साक्ष्य, साहित्य विनोद, कला विनोद, पुनर्वसु, कविता का जनपद (संपादित कृतियाँ)। इसके अतिरिक्त मुक्तिबोध, शमशेर और अज्ञेय की चुनी हुई कविताओं का संपादन । कुमार गंधर्व, निर्मल वर्मा, जैनेंद्र कुमार, हजारी प्रसाद द्विवेदी और अज्ञेय पर एकाग्र संपादित पुस्तकें । स्तंभलेखन : 'कभी कभार' ।
साहित्यिक पत्रकारिता		समवेत, पहचान, पूर्वग्रह, बहुवचन, कविता एशिया, समास आदि का संपादन । 'द बुक रिव्यू' समेत अनेक पत्रिकाओं के सलाहकार संपादक ।

अशोक वाजपेयी समसामयिक हिंदी के एक प्रमुख कवि, आलोचक, विचारक, कला मर्मज्ञ, संपादक एवं संस्कृतिकर्मी हैं । कवि एवं आलोचक के रूप में उनका उदय बीसवीं शती के सातवें-आठवें दशक में हुआ था । शती के अंतिम वर्षों में वे देश के शीर्षस्थ साहित्यकारों के बीच विशिष्ट ख्याति और प्रतिष्ठा के व्यक्ति बन गए । उनके अध्ययन, अनुशीलन, अभिरुचि एवं रचनात्मक गतिविधियों का दायरा विस्तृत है । कला, साहित्य और ज्ञान की विविध विधाओं के अतिरिक्त परंपरा और संस्कृति के विविध रूपों और अनुशासनों के बीच समन्वय और संवाद की कल्पनाशील जनतांत्रिक पहल के लिए वे पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं । लेखन और आयोजनों के द्वारा उन्होंने अनेक बार अपनी सामासिक अंतर्दृष्टि, जनतांत्रिक सोच और समावेशी उदार विनियोग-बुद्धि प्रमाणित की है । अशोक वाजपेयी का जीवन,

कला, साहित्य, संस्कृति, समाज आदि के संबंध में दृष्टिकोण और मनीषा आधुनिक अर्थों में भारतीय और वैश्विक एक साथ है ।

अशोक वाजपेयी एक कवि और साहित्यकार के रूप में हिंदी में 'अकविता' के अनास्थावादी नकारात्मक आंदोलन का स्वस्थ सकारात्मक समाजवादी दृष्टिकोण और संवेदना द्वारा सर्जनात्मक प्रतिकार करते हुए सामने आए थे । उनकी संवेदना, भाषा और रचनात्मक चिंताओं ने व्यापक पाठक वर्ग का ध्यान आकृष्ट किया था । वे एक समर्थ संभावना के रूप में इसलिए देखे और पहचाने गए थे कि कविता की जरूरतों और तकाजों की उनकी पहचान खरी थी । वे उन जरूरतों की भरपाई राजनीति और विचारधारा के उत्ताप भरे तात्कालिक तत्त्वों से नहीं करते हुए गहनतर रचनात्मक मानवीय अर्थों की पूछ-पेख के लिए समुद्यत दिखाई पड़े थे । आगे उनकी यह रचनात्मक खोज तो जारी रही किंतु इसके लिए मानव संबंधों के परिवर्तनशील यथार्थ से भरे हुए जीवन और समय-समाज के बीच जैसी गहन सन्नद्धता ऐसे स्वाधीनचेता कवि के लिए अनिवार्य थी, वह उन्हें प्राप्त न हो सकी । उनकी बहुविध व्यस्तताओं भरी जिंदगी ने ऐसा अवसर उन्हें लेने नहीं दिया । वे विविध कलाओं के सौंदर्य तथा दर्शन के शाश्वत प्रश्नों, सरोकारों, ऐंद्रिय सुखों और लालसाओं से अपनी कविता को लैस करते हुए आगे बढ़ चले । उनकी कविता में वैयक्तिक आग्रह बढ़ने लगे । खुशहाल मध्यवर्ग की अभिरुचियों को तुष्ट करने में उनकी कविता में एक तरह की स्वच्छंदता विकसित हुई । एक समर्थ कवि की पहचान उनकी कविता में कौंधती है; एक ऐसा कवि जिसका मानस विस्तृत है, उदार है; संवेदना पर्युत्सुक है और भाषा स्फूर्त, समर्थ, भारहीन और अर्थग्राहिणी है ।

प्रस्तुत कविता अशोक वाजपेयी के कविता संकलन 'कहीं नहीं वहीं' से ली गई है और एक गद्य कविता है । अशोक वाजपेयी ने गद्य कविताएँ काफी संख्या में लिखी और प्रकाशित की हैं । हिंदी में 'गद्यकाव्य' तो पुराना है जो वस्तुत: कविता नहीं, गद्य का ही एक रूप हुआ करता था; किंतु 'गद्यकविता' नई है और पिछले 15-20 वर्षों में अनेक कवियों द्वारा पर्याप्त संख्या में लिखी गई है । फ्राँसीसी, अंग्रेजी आदि यूरोपीय तथा अमेरिकी भाषाओं में नए ढंग की इस गद्यकविता का लेखन बीसवीं शती के पूर्वार्ध, विशेषकर द्वितीय विश्वयुद्ध के समय से ही, होता रहा है । फ्राँसीसी कवि सेंट जॉन पर्स की ऐसी गद्य कविताएँ टी० एस० एलियट के द्वारा लंबी भूमिका के साथ पेश की गई हैं, किंतु वे आकार में बहुत लंबी हैं । इस तरह की छोटी गद्य कविताएँ, खासतौर पर हिंदी में, बहुत नई हैं और इनका विशिष्ट रूप और आकार-प्रकार समसामयिक अनुभव की विलक्षणता में निहित है । कुछ तो महज फैशन के कारण भी लिखी जाती हैं किंतु मूलत: इनकी रूप-संरचना का उत्स कवि के काव्यानुभव में होता है जो गद्यात्मक होता है । गद्यात्मक यानी–दैनंदिन जीवन अनुभवों की धरती से बोलचाल-बातचीत और सामान्य मन:चिंतन के रूप में उगा हुआ, विवरणधर्मी, युक्ति-तर्क के कारण घुमावदार, पेचीदा और चौरस भी । यह कविता शासक वर्ग, राजनीति, युद्ध, इतिहास और आम आदमी को लेकर आधुनिक प्रसंगों में अनेक प्रश्न उठाती है और कौंध के एक क्षण में अनेक सारी वास्तविकताओं को बेपर्द करती हुई हममें एक ऐसी प्रतीति जगा जाती है जो परमुखापेक्षी और बँधुआ नहीं है, गहरे अर्थों में तटस्थ और मानवीय है । यह कविता समसामयिक हिंदी कविता में 'गद्यकविता' की प्रवृत्ति और रूप संरचना की यहाँ एक बानगी है ।

◆ ◆ ◆

"जो साथ चले थे जाने कब अपनी-अपनी राह कहाँ निकल गए । जाने कहाँ-कहाँ रोशनी की तलाश में भटकने के बाद अब समझ में आ रहा है कि रोशनी कहीं और से नहीं, इन्हीं शब्दों से आ रही है ।"

– अशोक वाजपेयी

हार–जीत

वे उत्सव मना रहे हैं । सारे शहर में रोशनी की जा रही है । उन्हें बताया गया है कि उनकी सेना और रथ विजय प्राप्त कर लौट रहे हैं । नागरिकों में से ज्यादातर को पता नहीं है कि किस युद्ध में उनकी सेना और शासक गए थे, युद्ध किस बात पर था । यह भी नहीं कि शत्रु कौन था पर वे विजयपर्व मनाने की तैयारी में व्यस्त हैं । उन्हें सिर्फ इतना पता है कि उनकी विजय हुई । उनकी से आशय क्या है यह भी स्पष्ट नहीं है : किसकी विजय हुई सेना की, कि शासक की, कि नागरिकों की ? किसी के पास पूछने का अवकाश नहीं है । नागरिकों को नहीं पता कि कितने सैनिक गए थे और कितने विजयी वापस आ रहे हैं । खेत रहनेवालों की सूची अप्रकाशित है । सिर्फ एक बूढ़ा मशकवाला है जो सड़कों को सींचते हुए कह रहा है कि हम एक बार फिर हार गए हैं और गाजे-बाजे के साथ जीत नहीं हार लौट रही है । उस पर कोई ध्यान नहीं देता है और अच्छा यह है कि उस पर सड़कें सींचने भर की जिम्मेवारी है, सच को दर्ज करने या बोलने की नहीं। जिन पर है वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे हैं ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. उत्सव कौन और क्यों मना रहे हैं ?
2. नागरिक क्यों व्यस्त हैं ? क्या उनकी व्यस्तता जायज है ?
3. 'किसकी विजय हुई सेना की, कि नागरिकों की ?' कवि ने यह प्रश्न क्यों खड़ा किया है ? यह विजय किनकी है ? आप क्या सोचते हैं ? बताएँ ।
4. 'खेत रहनेवालों की सूची अप्रकाशित है ।' इस पंक्ति के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है ? कविता में इस पंक्ति की क्या सार्थकता है ? बताइए ।
5. सड़कों को क्यों सींचा जा रहा है ?
6. बूढ़ा मशकवाला क्या कहता है और क्यों कहता है ?
7. बूढ़ा मशकवाला किस जिम्मेवारी से मुक्त है ? सोचिए अगर वह जिम्मेवारी उसे मिलती तो क्या होता ?
8. 'जिन पर है वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे हैं ।' 'जिन' किनके लिए आया है ? वे सेना के साथ कहाँ से आ रहे हैं, वे सेना के साथ क्यों थे, वे क्या जीतकर लौटे हैं । बताएँ ।
9. गद्य कविता क्या है ? इसकी क्या विशेषताएँ हैं ? इस कविता को देखते-परखते हुए बताएँ ।
10. कविता में किस प्रश्न को उठाया गया है ? आपकी समझ में इसके भीतर से और कौन से प्रश्न उठते हैं ?

कविता के आस-पास

1. अशोक वाजपेयी देश के एक प्रमुख संस्कृतिकर्मी हैं । इनके रचनाकार व्यक्तित्व के संबंध में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
2. बूढ़ा मशकवाला कौन हो सकता है ? देश-दुनिया का वह कौन व्यक्ति है जिसकी तुलना आप इस बूढ़े मशकवाले से करना चाहेंगे ।
3. युद्ध का अर्थ क्या दूसरे देश से लड़ाई से ही है, या युद्ध के दूसरे रूप भी हैं; घृणा, हत्या या दंगे क्या युद्ध के रूप नहीं हैं, आप क्या सोचते हैं, अपने मित्रों, शिक्षकों एवं बुजुर्गों से इस विषय पर बातचीत करें ।
4. दुनिया युद्धविहीन किस तरह हो सकती है ? मित्रों के साथ इस बारे में विचार कीजिए, अपने विचारों को सार रूप में लिखकर उसे विद्यालय की गोष्ठी में प्रस्तुत कीजिए ।
5. गद्य कविता हिंदी कविता की नई उपलब्धि है, गद्य कविता का पाठ विशेष लय में बँधा होता है । इसके पाठ में आप अपने शिक्षक की मदद लें । नीचे अभ्यास के लिए अशोक वाजपेयी की एक गद्य कविता **'दरवाजा'** दी जा रही है, आप इसके अतिरिक्त भी गद्य कविताएँ संकलित कर उनका पाठ करें ।

दरवाजा

दरवाजा खुल सकता था । कोई खोले तभी नहीं । अपने आप भी, क्योंकि पूरी तरह बंद नहीं था । किसी ने किया ही नहीं । सबको जाने की जल्दी होती है, ठीक से बंद करने की नहीं । जाने के बाद दरवाजा भुला दिया जाता है । अगर न जाते और वहीं बंद या घिरे रहते तो दरवाजा बना रहता–उसका ख्याल रहता । दरवाजा : घिरे हुए को रोकता है और अनघिरे हुए को अंदर आने से थामता है । दरवाजा न हो तो घिरा-अनघिरा गड्डमड्ड हो जाए । आवाजाही दरवाजे से होती है : पर फिर भी थोड़ा सा बाहर अंदर और थोड़ा सा अंदर बाहर फिसल ही जाता है क्योंकि दरवाजा कभी पूरी तरह से बंद नहीं होता । हम ऐसा करना जानबूझकर भूल जाते हैं ।

भाषा की बात

1. 'हार-जीत' में कौन समास है ?
2. 'ज्यादातर' में 'तर' प्रत्यय है । 'तर' प्रत्यय से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
3. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द लिखें –
   युद्ध, सेना, शत्रु, सड़क, रोशनी, उत्सव, शहर, विजय, हार
4. उत्पत्ति की दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों की प्रकृति बताएँ –
   रोशनी, सड़क, अवकाश, रथ, सेना, सिर्फ, नागरिक, सच, बूढ़ा
5. 'हार' प्रत्यय से पाँच अन्य शब्द बनाएँ एवं उनका अर्थ लिखें ।
6. 'विजय पर्व' में कौन समास है ?
7. निम्नलिखित पंक्तियों से सर्वनाम चुनें एवं यह बताएँ कि वे किस सर्वनाम के उदाहरण हैं –
   (क) किसी के पास पूछने का अवकाश नहीं है ।
   (ख) यह भी नहीं कि शत्रु कौन था ।
   (ग) वे उत्सव मना रहे हैं ।
   (घ) उन्हें सिर्फ इतना पता है कि उनकी विजय हुई ।
8. 'विजय' शब्द में 'वि' उपसर्ग है । 'वि' उपसर्ग से चार अन्य शब्द बनाएँ ।
9. वाक्य रचना की दृष्टि से कविता के किन्हीं तीन वाक्यों की बनावट बताएँ ।
10. कविता से सभी क्रियापद चुनिए ।

शब्द निधि

खेत रहना : मारा जाना
मशकवाला : पानी रखनेवाला चमड़े का थैला (मशक) रखने वाला ।